पुरवैया के नूपुर

देवराज दिनेश

आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली-6

PURVAIYA KE NOOPUR
(Collection of poems)
by
Dev Raj Dinesh
Rs. 4.00

प्रकाशक
रामलाल पुरी, संचालक
आत्माराम एण्ड संस
काश्मीरी गेट, दिल्ली-6

शाखाएँ
हौज खास, नई दिल्ली
चौड़ा रास्ता, जयपुर
माई हीरां गेट, जालन्धर
बेगमपुल रोड, मेरठ
विश्वविद्यालय क्षेत्र, चण्डीगढ
महानगर, लखनऊ-6

मूल्य : चार रुपए
प्रथम संस्करण : 1963

मुद्रक
लीडर प्रेस
इलाहाबाद

उर्मिल को --

संकेत

'पुरवैया के नूपुर' मानस की रसवन्ती वीणा पर गाए गए भावनात्मक, रागात्मक प्रणय गीतों और कविताओ का सग्रह है।

मेरे काव्य का प्रेरणास्रोत मेरी यौवनावस्था के वही प्रारम्भिक क्षण थे जो हर कवि के मानस के साथ अठखेलियाँ करते है।

वेदना, व्यग्रता चाहे वह किसी भी प्रकार की क्यो न हो, जब कवि के मानस से क्रीड़ा करने लगती है तब बरबस ही काव्य का स्रोत कवि के अन्तर से फूट निकलता है। मेरे काव्य के जन्मदाता भी वेदना और व्यग्रता के वही क्षण रहे है।

आपदा के क्षणों मे, अपनी यौवनावस्था में जीवन की घाटियों में घूमते हुए मैंने दूज से लेकर पूनम तक की प्रणय ज्योत्स्ना का अनुभव किया है, पूनम के बाद ढलती हुई ज्योत्स्ना का भी। कई बार अमावस की गहरी कालिमा मे भी मेरे भावुक मन ने प्रणय गीत गाए है।

प्रेयसि के सान्निध्य में भी प्रणय गीतो ने जन्म लिया है और उस वियोगावस्था मे भी, जबकि जीवन पर गहरा एकाकीपन छाया रहा है। इस प्रकार की सभी मनोदशाओ का चित्रण इन रचनाओ मे हुआ है।

इन गीतो मे स्वर चाहे मेरी मनस्थितियों के ही मुखरित हुए हों किन्तु चित्र मानवमात्र की उस मनोदशा का है जिससे कोई भी अछूता नही है। किसी अतिभावुक हृदय से ये रागात्मक भाव फूट बहते हैं और बहुत से हृदय काव्य-सिद्धि के न प्राप्त होने पर भी प्रणय भावनाओ का रसास्वादन करते हुए अभिव्यक्ति के अभाव में जीवन के अन्तिम सोपान तक पहुँच जाते हैं।

जड़, चेतन सभी इस प्रणय की डोर में बँधे हैं। सृष्टि के आदि से यह भाव जड़-चेतन पर छाया रहा है और अन्त तक छाया रहेगा। चिर सत्य, शाश्वत इस प्रणय राग की अवहेलना कर ही कौन सकता है!

अनुभूति जितनी तीव्र होगी, प्रभाव भी उतना ही अधिक स्थायी होगा। अनुभूति जब अभिव्यक्त होने को व्यग्र हो जाती है तो बरबस

ही हृत्तन्त्री के तार झंकृत हो उठते है। मेरे साथ भी यही हुआ है। अनुभूति ही इन रचनाओं का प्राण है।

काव्य के व्यायाम से मुझको चिढ़ है। हृदय जब तक साथ न दे तब तक कविता नही लिखी जा सकती। चाहे वर्ष में एक ही कविता लिखी जाय किन्तु वह तभी लिखी जाय जब कि मन की रसवन्ती वीणा पर स्वत ही मुखरित हुई हो।

युग के आग्रह पर तर्कप्रधान रचनाएँ तो लिखी जा सकती हैं किन्तु भावप्रधान नही। भावप्रधान हृदय के आग्रह पर ही लिखी जा सकती है।

प्रणय एक ऐसा भाव है जो उत्पन्न होने के बाद वय के बन्धन में बँधने को प्रस्तुत नही होता। अलग बात है वह मन ही मन घुटता रहे, सिसकता रहे, सुलगता रहे। कोई भी रूप वह ग्रहण करे किन्तु जीवन-भर हृदय के साथ अठखेलियाँ करता रहता है।

और यह अचराचर प्रकृति प्रणयी हृदय के लिए सदैव ही उद्दीपन का कार्य करती रहेगी। और सच्चा अनुभूतिभरा प्रणयी मन, निश्चित ही प्रणय की उन वीथियो मे विचरण करने लग जाता है जहाँ प्रिय और प्रकृति उसके लिए एकाकार हो जाते है। प्रणय की परिपक्वता पर कोकिला का स्वर बेचैन करने की जगह रागात्मक सम्बोधन बन जाता है। प्रेमी हृदय से प्रकृति विविध रूपों में बात करती है। निशा के सूने क्षणों मे हम तारो का सगीत सुनते है। सुगमता से उनकी रहस्यात्मक भाषा समझते जाते हैं।

कहते है चंचल तारे कर मौन इशारे
प्यार सदा होता है जग में बिना विचारे
जहाँ नहीं है रूप, अगर मुस्कान वहाँ है
प्रकृति स्वयं देती जीवन का दान वहाँ है।

सृष्टि मे कुछ अपवाद हो सकते है, होंगे! नहीं तो सभी हृदय प्रणय-मंदाकिनी की लहरो पर डूबते-उतराते हैं। लेकिन आज के इस

विडम्बनामय समाज में इस शाश्वत सत्य के विरोध में भी ढींग हाँकना एक फैशन बन गया है।

मैं कभी संघर्ष से ऊबा नहीं
या किसी की याद में डूबा नहीं
है बनी यह बात कहने के लिए
स्वयं से सन्तुष्ट रहने के लिए
सोचता हूँ है मनुज कितना छली
जो स्वयं को छल रहा बनकर उदार॥

अपने और अपने प्रिय के हृदय की विविध स्थितियों के चित्रण हैं इन गीतों में। अपने और प्रिय के माध्यम से मैंने उन्हें व्यक्त किया है।

मुझे भुलाने को तुम सौ सौ कसमें खाती हो
मगर तुम भुला न पाती हो।
स्वप्न सरीखी उजड़ी उजड़ी दुनिया दिखती है
नहीं चाह, पर पत्र लेखनी फिर भी लिखती है
लिखना कुछ होता है, लेकिन लिख कुछ जाती हो
बुझाकर दीप जलाती हो॥

इस संग्रह में चार-पाँच रचनाएँ वे हैं जिन्हें मैंने अत्यधिक मोहवश इसमें रखा है, क्योंकि ये प्रणय-वीणा पर गुंजरित प्रारम्भिक स्वर-लहरों को लिए हुए है। 'मनुहार', 'यह बात किसी से मत कहना', 'पर काट दिए अब कहती हो', इत्यादि।

प्रणय की परिभाषा बहुत ही कठिन है, फिर भी कविमन अपने तर्क दे ही तो बैठता है—

प्यार की भाषा बहुत मीठी, बहुत गहरी
प्यार के हर शब्द का विश्वास है प्रहरी

यहाँ मैं काव्य और प्रणय की व्याख्या नहीं कर रहा हूँ। जीवन

मे कभी समय मिला तो काव्य की क्षमताओं और उसकी विशदता पर अलग से पुस्तक लिखूंगा।

भूमिका न होकर यह संकेत चिह्न है।

'भारत माँ की लोरी', 'जीवन और जवानी', 'पुरवैया के नूपुर', ये तीनो कविता-संग्रह लगभग एक साथ ही प्रकाशित हो रहे हैं।

तीनों मे अपने-अपने ढग से पाठकों के हृदय को विमोहित करने की क्षमता है।

इनमें वे सभी प्रमुख रचनाएँ है जो विशिष्ट पत्र-पत्रिकाओं, आकाशवाणी और कवि-सम्मेलनों के माध्यम द्वारा काफी ख्याति प्राप्त कर चुकी है। और वे भी है जो अधिक गम्भीर हैं। भाषा भाव से अधिक दृढ़ हैं किन्तु फिर भी कवि-सम्मेलनों में पढने की उन्हे इच्छा नही होती।

हास्य-व्यग्य की कविताएँ 'मेरी व्यंग्य कविताएँ' नामक संग्रह के द्वारा शीघ्र ही आपके हाथो में पहुँचेंगी।

'अन्तर्गीत' का दूसरा सस्करण भी आप लोगो को शीघ्र ही उपलब्ध हो सकेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

पहले-पहल 'अन्तर्गीत' के गीत ही प्रणय की लहरों पर लहराते हुए मेरे मानस से प्रकट हुए थे।

प्रणय के क्षेत्र मे मै साधिकार यही कह सकता हूँ—

मैं मानव हूँ, मैं कोई भगवान नहीं हूँ
मै निर्झर हूँ, गर्वोन्नत चट्टान नही हूँ
मैं प्रतिक्षण, प्रतिपल आगे बढ़ने का आदी
गाता हूँ, नित नए उमंगोंभरे तराने।

मेरा सारा जीवन काव्य की साधना में बीता है और बीते इसी आशा और विश्वास के साथ—

— देवराज दिनेश

एल 2C, मालवीय नगर,
नई दिल्ली—17

अनुक्रम

1. एक दिन प्रिय पाहुना	1
2. जल रही है कांपती-सी	3
3. तुम मिलीं मुझको	5
4. मेरे प्रिय चांद-सितारों को	7
5. तुम तब आना !	9
6 पूछा तारों ने चन्दा से	12
7 शक्ति है तुममें	14
8. जब मिले मस्तक हुए नत	16
9 प्यार कर, पर प्यार को	18
10 चाहते हो मैं तुम्हारा	20
11. मैं हूँ, तुम हो सखि ! और	22
12 रूप तुम्हारे पास, किन्तु	24
13. मानता हूँ प्रिय ! तुम्हारा	27
14. पथ बदलना और चलना	29
15. जीवन के इस अभिनव	31
16. मांग लो वर आज, फिर	33
17. प्राण तुम भी	36
18. उलझन	39
19. मैं तुम्हारा गीत हूँ	42
20. पंख यदि होते खुले	44
21. भक्त हूँ, पर वन नहीं पाए	47
22. मैं किसी का था	49
23. तुम मुझे वरदान देने	51
24. भूल पाए क्या किसी को	53
25. आज फिर पथ पर	55
26. यह बात किसी से मत कहना	57
27. पर काट दिए अब कहती हो	60

28. मनुहार 63
29. अब मरुथल हूँ 66
30. दुख के क्षण 68
31. अब भी कभी-कभी 71
32 प्रिय स्मृति बन उन्माद 74
33. तुम गिन-गिनकर प्रतिशोध 77
34. स्वप्न और जागरण 79
35. मैं कब तक देखूँ राह 81
36 व्यर्थ मत अपनी कसम 83
37 होली के दिन बरसात 85
38 उपेक्षा के शरों से बींध दो 87
39 पहली बार आज मैं 89
40 पहली बार आज तुम 91
41. तुम मुझे मदिरा पिलाने 93
42. अन्तर्ज्वाला 96
43. प्रतीक्षा में 98
44 पूछ रहा है मन मुझ से 100
45 किस निर्मोही ने रोक लिया 102
46. आज तुम्हारे आग्रह पर 105
47. ओ मेरी सुन्दर मधुबाले 107
48 विगत प्रेयसि के प्रति 110
49. मेघ शावक आ गये हैं 113
50. मगर तुम भुला न पाती हो 115
51. पहाड़ी रात 116
52. अधरों तक आकर यदि 120
53. वह कली थी 122
54. चरण आगे किन्तु 124
55. पुरवैया के नूपुर बजते 126

एक दिन प्रिय पाहुना······

एक दिन प्रिय पाहुना आया तुम्हारे द्वार

जा चुकी थी साँझ अपने देवता के देश
दे चुकी थी, प्यार का प्रिय को मधुर संदेश
राह रपटीली, अंधेरे से रही थी खेल—
थकित पंथी कर रहा था पगों की मनुहार।
एक दिन प्रिय पाहुना आया तुम्हारे द्वार ॥

तुम सलौने नीड़ में बैठी हुई चुपचाप,
सुन रही थी, काल्पनिक प्रिय की सुखद पदचाप
साधना में लीन, मादक भावना में मौन—
आ, किसी ने खटखटाया, प्यार का संसार।
एक दिन प्रिय पाहुना आया तुम्हारे द्वार ॥

धरणि-अम्बर एक करती थी प्रबल बरसात
काँपता था विश्व, इतनी भयभरी थी रात
एक सुन्दर पथिक का था थरथराता गात—
खोल तुमने द्वार, पाया प्यार का आधार।
एक दिन प्रिय पाहुना आया तुम्हारे द्वार ॥

यह तुम्हारा, ले सहारा, हो गया था मौन
पूछती थी हृदय की धड़कन तुम्हें, यह कौन
सोचती सी तुम, जलाती जा रही थी आग--
चेतना देकर हँसे, जलते हुए अंगार।
एक दिन प्रिय पाहुना आया तुम्हारे द्वार॥

सो गया राही, खिलाकर मृदु हँसी के फूल
फूल ये तुम को चुभे, बनकर नशीले शूल
सोचती थी तुम, कहाँ से आ गया चितचोर--
तुम रही निशि भर हृदय की बनी पहरेदार।
एक दिन प्रिय पाहुना आया तुम्हारे द्वार॥

रात भर खग कर चुका था नीड़ में विश्राम
प्रात आया, साथ में लाया, विदा का याम
सिर झुका, पग चल दिए, कह लोचनों से बात--
वह गया, पर दे गया तुमको व्यथा का भार।
एक दिन प्रिय पाहुना आया तुम्हारे द्वार॥

मिल गया तुमको तुम्हारी कल्पना का मीत
हो गया सुरभित तुम्हारी वेदना का गीत
जो रहे अक्षय युगों तक, बन किसी की याद
मिल गया तुमको, सजीले मोतियों का हार।
एक दिन प्रिय पाहुना आया तुम्हारे द्वार॥

जल रही है काँपती-सी......

जल रही है काँपती-सी मोम की बाती।

ये मधुर तारे बिछे हैं रात के पथ में
स्वप्न की परियाँ रही फिर चाँद के रथ में
कल्पना का खग क्षितिज के छोर छू बैठा
देख जिसको चाँदनी की चाह शरमाती
जल रही है काँपती-सी मोम की बाती।

इस पहाड़ी पंथ की यह मौन पथ-शाला
सोचती है आ गया यह कौन मतवाला
इन झरोखों से पवन के आ रहे झोंके
देख जिनको है जवानी सिहर-सी जाती
जल रही है काँपती-सी मोम की बाती।

आज नयनों से निगोड़ी नींद भी भागी
और उसके लौटने की आस भी त्यागी
चाँद की किरणें रही हैं खेल आँगन में
है यहाँ परदेश, प्रिय की याद है आती
जल रही है काँपती-सी मोम की बाती।

साँझ आई है किसी का प्यार लाई है
शून्य जीवन में नवल शृंगार लाई है
तुम न रूठो प्राण ! मैं रूठा नहीं तुम से
पढ़ चुका हूँ आज कितनी बार यह पाती
जल रही है काँपती-सी मोम की बाती ।

है बजाता दूर बैठा बाँसुरी कोई
है जगाता साधना से रागिनी सोई
इस मधुर स्वर ने मुझे भी कर दिया उन्मन
हिल उठी है आज मेरी वज्र सी छाती
जल रही है काँपती-सी मोम की बाती ।

तारकों की हाट पथ में लूट ली किसने ?
लूट ले चाँदी उन्हे यह छूट दी किसने ?
रूप का राजा किसी ने कर लिया बन्दी
आ गये है शोर करते मेघ बरसाती
जल रही है काँपती-सी मोम की बाती ।

नियति की इच्छा रही तो हम मिलेंगे ही
प्रिय-मिलन की चाह के शतदल खिलेंगे ही
कब तलक छाये रहेगे मेघ अम्बर पर
चीर कर इनको हँसेगी धूप मुस्काती
जल रही है काँपती-सी मोम की बाती ।

·तुम मिलीं मुझको·······

तुम मिली मुझको जवानी मिल गई फिर से।

हैं अधर मेरे मधुर मधु की मधुरता से
तुम सुघड़ हो रूप यौवन की सुघड़ता से
कह रहा है चाँद मेरे शून्य का साथी—
प्रिय ! तुझे खोई निशानी मिल गई फिर से।
तुम मिली मुझको जवानी मिल गई फिर से ॥

मैं पथिक पथ हीन मेरा कौन था जग मे
नियति ने कांटे बिछाये थे कठिन मग मे
तुम मिलीं मरु के पथिक को जिन्दगी बन कर—
मौन मन को मुखर वाणी मिल गई फिर से
तुम मिली मुझको जवानी मिल गई फिर से ॥

कर रहे हैं हम नशीली प्यार की बातें
हम खिले हैं, खिल उठी हैं चाँदनी रातें
शोख तारे कर इशारे मुस्कराते हैं—
आज प्रिय को राज-रानी मिल गई फिर से।
तुम मिली मुझको जवानी मिल गई फिर से ॥

कल्पना के लोक का वासी रहा हूँ मैं
प्यार के प्रति अटल विश्वासी रहा हूँ मैं
आज निर्वासित प्रवासी को मिली हो तुम—
कल्पना को राजधानी मिल गई फिर से।
तुम मिली मुझको जवानी मिल गई फिर से॥

रूठना भी है तुम्हें आता मनाना भी
लोचनों का नीर पीकर मुस्कराना भी
आज मेरा दिल मुझे हर बार कहता है—
प्रिय ! तुझे तेरी कहानी मिल गई फिर से।
तुम मिली मुझको जवानी मिल गई फिर से॥

मैं तुम्हारी तनिक दूरी सह नहीं सकता
बन तुम्हारा, बिन तुम्हारे रह नहीं सकता
देखता हूँ तुम स्वयं मजबूर हो रानी—
यह अजब-सी परेशानी मिल गई फिर से।
तुम मिली मुझको जवानी मिल गई फिर से॥

चिर युगों के बाद फिर उर में उठी धड़कन
लोचनों में भी लगे हैं खेलने जलकण
आ गया सावन रँगीली चाह-सा प्यारा—
शुष्क सरिता को रवानी मिल गई फिर से।
तुम मिली मुझको जवानी मिल गई फिर से॥

मेरे प्रिय चाँद-सितारों की······

मेरे प्रिय चाँद-सितारों की इस दुनिया में ।
मेरे प्रिय अपने प्यारों की दुनिया में ॥

बस एक तुम्ही हो मेरे जीवन के साथी
रोदन-गायन, सुख-दुःख, सूनेपन के साथी
जिस पर विश्वास रहा है नन्हे से उर को—
तुम ही हो असह प्रहारों की इस दुनिया में ।
मेरे प्रिय चाँद-सितारों की इस दुनिया में ॥

विपदाएँ आती हैं, घनघोर घटाओं-सी
पथ विचलित कर देती मुँहजोर हवाओं-सी
तब तुम दुलरा कर मुझको धैर्य बँधाते हो—
मेरे प्रिय कुटिल इशारों की इस दुनिया में ।
मेरे प्रिय अपने प्यारों की इस दुनिया मे ॥

जब दूर गगन में एक सितारा झिलमिल सा
मैं देखा करता हूँ अपने बुझते दिल सा
तब तुम मुझको मेरे पागलपन के साथी—
ले आते हो मनुहारों की इस दुनिया में ।
मेरे प्रिय चाँद-सितारों की इस दुनिया में ॥

जीवन बीता जिसके संग सुख-दु:ख में रहते
अन्तिम क्षण वे भी मीत नहीं अपना कहते
तब कई बार जीना मुश्किल बन जाता है—
मेरे प्रिय क्षुद्र विचारों की इस दुनिया में।
मेरे प्रिय असह प्रहारों की इस दुनिया में ।।

जड़ प्रकृति जिसे सारी दुनिया बतलाती है
सचमुच प्रिय उसकी कितनी विस्तृत छाती है
पर मानव कभी न जीने देगा मानव को—
अपने अनन्त अधिकारों की इस दुनिया में।
मेरे प्रिय क्षुद्र विचारों की इस दुनिया में ।।

मैं कस्तूरी के मृग-सी व्यथा महान् लिए
अपने में आकुल, अपने पागल प्राण लिए
कुछ समझ नहीं आता है मेरा क्या होगा—
अपनों के अत्याचारों की इस दुनिया में।
मेरे प्रिय अपने प्यारों की इस दुनिया में ।।

इस मरु के रेतीले पथ पर चलते-चलते
बन स्वेद धैर्य गल जाता है जलते-जलते
तब तुम हिम शीतल स्नेह सुधा बन आते हो—
मेरे प्रियवर ! अंगारों की इस दुनिया में।
मेरे प्रिय ! चाँद-सितारों की इस दुनिया मे ।।

तुम तब आना !

तुम तब आना,
जब नभ पर घन दल मँडराये,
चपला चमके मन घबराये,
फिर शीत पवन के झोंकों से
तन सिहर उठे, सिर झुक जाये ।।
औ' अनजाने में बढ़ जायें
मेरी बाँहें आलिंगन को—
तब धीरे - धीरे से आकर
तुम भुज बन्धन में बँध जाना ।

तुम तब आना,
हो नव वसन्त, कोकिल बोले,
वन भ्रमित चकित, भँवरा डोले ।
जब हाट लगा कर बैठी हो,
सब सृष्टि ग्रन्थि उर की खोले,
जब कलि के कानों में अलि का
सन्देश गूँजता हो प्रतिपल—
तब चुपके-चुपके से आकर
तुम सब रहस्य बतला जाना ।

तुम तब आना,
मैं तुम्हें ढूंढने को निकलूँ,
फिर अपनी कुटिया से जिस क्षण।
चलते-चलते पग छिद जायें,
हो जाय शिथिल जब मेरा तन ॥
औ' किसी शिला का ले आश्रय
हो बेसुध जाऊँ बैठ कहीं—
तब हौले-हौले से आकर
कंटक निकाल तन सहलाना।

तुम तब आना,
जब जलते - जलते दीप शिखा,
अपनी प्रिय ज्योति गवां जाये।
जब नभ से लेकर धरती तक,
कुहरा ही कुहरा छा जाये।
जब मिलन प्रतीक्षा की अन्तिम—
आशा पर फिर जाये पानी
तब अलसित, मस्त, अचेतन से
तुम आकर द्वार खटखटाना।

तुम तब आना,
जब नभ से चाँदी बिखर-बिखर,
धरती पर बिछती जाती हो।
नद उछल-उछल कर बहता हो,
औ' नाव थपेड़े खाती हो।
मैं लक्ष्य - भ्रष्ट होकर सोचूं
अब जीवन का आधार कहाँ ?
तब, तट पर आ, निज हाथ उठा,
प्रिय ! साथी कहकर चिल्लाना !

तुम तब आना,
सूनापन मुखरित करने को,
जब बजती हो वीणा मनहर।
दृग बंद, पूर्ण तन्मयता से,
तारों पर थिरक रहा हो कर।
उस जीवन की बेहोशी में
जायें वीणा के टूट तार—
दृग खुलने से पहले आकर
तुम तार लगाकर मुस्काना!

तुम तब आना,
जब प्रलय हिलोरे लेती हो,
उनचास पवन खुलकर गावें।
धरती डोले, अम्बर काँपे,
रवि-शशि, दोनों ही छिप जावें।
मैं, जीवन के तममय पथ पर
गिरता-पड़ता बढ़ता जाऊँ!
तब पंथ - प्रदर्शन करने को—
तुम अमिट ज्योति बन छा जाना!
तुम तब आना।

पूछा तारों ने चन्दा से.......

मैं युगों-युगो से खोज रहा हूँ अपनी मीरा मतवाली।

पूछा तारों ने चन्दा से यह कौन प्रवासी उन्मन मन?
चन्दा का क्या था हँस बोला—होगा कोई निराश यौवन।
मालूम नहीं है चन्दा को मेरे जीवन की मादकता—
जिस के आगे शरमा जाए उसके जीवन की उजियाली।
मैं युगों-युगों से खोज रहा हूँ अपनी मीरा मतवाली॥

घूमा हूँ कितने ही जीवन, जीवन भर प्रिय की याद लिये,
आह्लाद लिये, उन्माद लिये, थकने पर सघन विषाद लिये।
बनना, मिटना, मिटकर बनना, यह तो जग में जीवन का क्रम—
मैंने जितने जीवन बदले उन सब में ही पीड़ा पाली।
मैं युगों-युगों से खोज रहा हूँ अपनी मीरा मतवाली॥

सन्ध्या है, हिम मण्डित शिखरों से देख रहा हूँ मैं रवि को,
मैं देख रहा हूँ उसके इस जीवन की उन्मादक छवि को।
अंतिम क्षण है तो क्या है कल फिर नये जन्म की आशा है—
नभ के वक्षस्थल पर फैली है रवि की रक्त भरी लाली।
मैं युगों-युगों से खोज रहा हूँ अपनी मीरा मतवाली॥

इस सघन निराशामय तम में पागल पंथी मत जा, मत जा
यह एक शब्द था अन्तरिक्ष में रह-रह करके गूँज रहा।
यह चरण नहीं रुकनेवाले जब तक आ पाता लक्ष्य नहीं—
आँधी, अन्धड़, तूफ़ान सभी ले आए यह रजनी काली।
मैं युगों-युगों से खोज रहा हूँ अपनी मीरा मतवाली॥

दुनिया शब्दों के तीर घने मुझ पर बरसाया करती है,
आराधक, साधक कह-कह कर निज मन बहलाया करती है।
पहले कुछ सिहरन-सी आकर उर में आकुलता भरती थी—
पर अब मन कहता है मत डर दुनिया मेरी देखी-भाली।
मैं युगों-युगों से खोज रहा हूँ अपनी मीरा मतवाली॥

बाधाओं पर बाधाएँ तो दुनियावाले पहुँचायेंगे,
यह मधु है, मधु कह कर मुझको हालाहल पान करायेंगे।
हालाहल पीने से भी तो हो सकती मेरी मृत्यु नहीं—
मृत्युञ्जय के विषधर ही तो करते हैं मेरी रखवाली।
मैं युगों-युगों से खोज रहा हूँ अपनी मीरा मतवाली॥

जब मेरी बंशी के स्वर पर मीरा नाचेगी, गायेगी,
चन्दा के रथ पर चढ़ी हुई पूनम मुस्काती आयेगी।
उस मधुर मिलन के मृदु क्षण में जग की परिभाषा बदलेगी—
चिर शुष्क अधर बन जायेंगे मधुपायी औ' मधु की प्याली।
मैं युगों-युगों से खोज रहा हूँ अपनी मीरा मतवाली॥

शक्ति है तुममें·······

शक्ति है तुममें मुझे अपना बनाने की

मैं विहग, जिसने गगन की वीथियाँ घूमी,
बादलों मे रह हठीली बिजलियाँ चूमी,
प्रलय भी देखी, प्रबल हिम-पात भी देखे——
शक्ति है तुममे मुझे भू पर बुलाने की !
शक्ति है तुममें मुझे अपना बनाने की ।।

नीड़ मे रहना मुझे बिलकुल नहीं भाया,
क्योंकि जग मे मैं किसी का बन नही पाया,
शक्ति है तुममें मधुर मुस्कान की रानी——
चिर युगों के मौन पाहुन को रिझाने की !
शक्ति है तुममे मुझे अपना बनाने की ।।

चाँद-तारों का शिकारी हूँ, पुजारी हूँ,
प्रकृति के इस वक्ष पर निर्जन विहारी हूँ,
है लगन तुम में मुझे अपना बनाने की——
चाँद-तारों की नई बस्ती बसाने की !
शक्ति है तुममें मुझे अपना बनाने की ।।

मैं नियति, भगवान् दोनों से रहा रूठा
छल रहे हैं यह मनुज को रौंद दे भूठा,
पंगु दुनिया से न मेरी निभ कभी पाई——
है बहुत क्षमता मगर तुम में निभाने की !
शक्ति है तुममें मुझे अपना बनाने की ।।

रूप देखा, रूप का संसार भी देखा,
रूप वालों का घिनौना प्यार भी देखा
अति मधुर मुस्कान अधरों पर सुखा डाली——
है तुम्हें चिन्ता उसे फिर से जिलाने की !
शक्ति है तुममें मुझे अपना बनाने की ।।

नीड़ के निर्माण में सहयोग मैं दूंगा,
प्यार का तुमको नशीला रोग मैं दूंगा,
साधना की शक्ति लेकर भक्ति की प्रतिमे——
है तुम्हारी चाह पत्थर को गलाने की !
शक्ति है तुम में मुझे अपना बनाने की ।।

यदि मुझे फिर गगन की लहरें बुलायेंगी,
बिजलियाँ भी कर इशारे मुस्करायेंगी,
सह सकूंगा किस तरह प्रिय मान मैं उनका——
लौटने पर क्या सजा दोगी रुलाने की ?
शक्ति है तुममें मुझे अपना बनाने की ।।

जब मिले मस्तक हुए नत.......

जब मिले मस्तक हुए नत, क्या यही सम्मान कम है ?

विश्व कहता है हमें अलि-प्रेम भी करना न आया
जब मिले तब कुछ न बोले क्या किसी से शाप पाया

जब मिले तब मुस्करा कर क्या यही वरदान कम है ?
जब मिले मस्तक हुए नत, क्या यही सम्मान कम है ?

जानता हूँ बह रही है दो हृदय में प्रेमधारा
मानता हूँ अति कठिन है मिलन इस जग में हमारा

दृग मिले कर मौन इंगित क्या यही आह्वान कम है ?
जब मिले मस्तक हुए नत, क्या यही सम्मान कम ?

मिलन दिन की स्मृति अभी तक है हृदय में राजरानी
परिचितों को हैं सुनाते हम वही मादक कहानी

सोचता हूँ प्रेम का अलि क्या यही परिमाण कम है ?
जब मिले मस्तक हुए नत, क्या यही सम्मान कम है ?

हो चुके मृत प्राण समहत, किन्तु फिर भी बढ़ रहे हैं
देवि ! जीवन की भयावह घाटियों पर चढ़ रहे हैं

प्रेम करके जी रहे हैं क्या यही बलिदान कम है ?
जब मिले मस्तक हुए नत, क्या यही सम्मान कम है ?

यदि किसी ने यह बताया है दुखी साथी तुम्हारा
विवशता बन हूक आई, बह चली तव अश्रुधारा

देव पूजन को बता अलि, क्या यही सामान कम है ?
जब मिले मस्तक हुए नत, क्या यही सम्मान कम है ?

· प्यार कर, पर प्यार को······

प्यार कर, पर प्यार को बदनाम मत कर प्रिय !
प्यार करना तो नही हर एक को आता !

वेदना का सिन्धु अन्तर में समाया हो
चाँद को लख कर हृदय में ज्वार आया हो,
बात आए अधर तक, पर कह न तुम पाओ
और उसको बिन कहे भी रह न तुम पाओ;

मूक हो तुम, किन्तु अन्तर गुनगुनाता हो
आँसुओं का हार बरबस बिखर जाता हो;
उस समय तव गीत लेगा जन्म धरती पर—
वह निभायेगा तुम्हारे प्यार का नाता !

प्यार की भाषा, बहुत मीठी बहुत गहरी,
प्यार के हर शब्द का विश्वास है प्रहरी;
हर किसी को प्यार बतलाया नहीं जाता—
हर किसी को हृदय दिखलाया नही जाता;

प्रबल झंझावात में भी प्यार की बाती,
सत्य कह दूँ प्रिय ! कभी भी बुझ नहीं पाती,
स्वार्थ, छल व प्रवंचना हों जिस जगह रहते—
प्यार का बिरवा वहाँ पर उग नही पाता !

प्यार पहली बार जब विधि ने बनाया था,
प्रकृति के हर अंग से उसको सजाया था,
चाँद से शीतल किरण, रवि से जलन ले दी—
कोकिला ने कुहुक, पपीहे ने व्यथा दे दी;
सिन्धु ने गम्भीरता, हिमवंत ने गुरुता,
और धरती ने उसे दी सहन की क्षमता;
सुखद निर्झर ने उमंगें सौंप दी अपनी—
बन गया संसार का तब प्यार निर्माता।

चूम बादल ने उसे गम्भीर वाणी दी,
विद्युता ने तड़प कर अपनी निशानी दी;
पूर्णता फिर भी नहीं जब प्यार ने पाई—
देख स्रष्टा की प्रबलतम बुद्धि चकराई;
उस समय बोला विहँस कर अटल ध्रुवतारा,
बिन अटलता क्या जिएगा प्यार बेचारा!
और ध्रुव से पा अटलता प्यार हर्षाया—
प्यार का परचम अटलता बिन न लहराता।
प्यार कर, पर प्यार को बदनाम मत कर प्रिय!
प्यार करना तो नहीं हर एक को आता!

चाहते हो मैं तुम्हारा……

चाहते हो मै तुम्हारा मीत बन जाऊँ ?

स्वप्न के संसार में आते रहे हो तुम,
हर दुःखद क्षण मीत दुलराते रहे हो तुम,
मैं किसी को हार बन कर जी रहा हूँ प्रिय—
चाहते हो अब तुम्हारी जीत बन जाऊँ ?
चाहते हो मै तुम्हारा मीत बन जाऊँ ?

चाँदनी रातें बनी हैं मुस्कराने को
मधुर बरसातें बनी हैं गीत गाने को
चाहते हो तुम युगों तक जो रहे जीता—
इस तरह का मै अनश्वर गीत बन जाऊँ ?
चाहते हो मैं तुम्हारा मीत बन जाऊँ ?

मिलन का क्षण एक है, पर विरह के क्षण सौ
हर समय तो मिल नही पाती शलभ को लौ
लौ निशा में ही मिलेगी दीप जलने पर—
क्या कहा प्रिय मै शलभ की प्रीत बन जाऊँ ?
चाहते हो मैं तुम्हारा मीत बन जाऊँ ?

याद है तुमने किसी दिन गीत गाया था
गीत के हर बोल में मुझको बुलाया था
आ न पाया मैं, हृदय माना न था मेरा—
किस तरह मैं स्वयं के विपरीत बन जाऊँ ?
चाहते हो मैं तुम्हारा मीत बन जाऊँ ?

तुम मुझे अपना बनाने के लिए व्याकुल,
मैं किसी को भूल जाने के लिए आकुल,
मैं दुःखों की छाँह में पलता रहा हरदम—
किस तरह प्रिय अब सुखद संगीत बन जाऊँ ?
चाहते हो मैं तुम्हारा मीत बन जाऊँ ?

मानता हूँ है तुम्हारे पास वह चितवन,
देख जिस को सिहर जाये देवता का मन,
पर मनुज में देवता में है बहुत अन्तर
किस तरह मैं मनुज आशातीत बन जाऊँ ?
चाहते हो मैं तुम्हारा मीत बन जाऊँ ?

क्यों किसी के रहम पर मैं स्वयं को छोड़ूँ,
प्रगति के प्रिय पन्थ से सम्बन्ध मैं तोड़ूँ,
मैं उसी का हूँ चलेगा साथ जो पथ पर—
मैं रुकूँ, मतलब कि मैं भयभीत बन जाऊं ?
चाहते हो मैं तुम्हारा मीत बन जाऊं ?

मैं हूँ, तुम हो सखि ! और·······

मै हूँ, तुम हो सखि ! और नशीला अम्बर है ।

गाओ तुम ऐसा गीत कि जिसको सुन करके,
स्वर झंकृत हो जायें इस सूने अन्तर के,
फिर ऐसी रात न इस जीवन में आएगी,
फिर कब यह मधुर चाँदनी हमें बुलाएगी,
इस अवसर को प्रिय आज व्यर्थ मत जाने दो,
अपना स्वर अन्तरिक्ष मे तुम लहराने दो,
यह प्रकृति नटी भी रुकी, टकी सी रह जाए—
चंदा भी समझे धरती का कोई स्वर है।
मैं हूँ, तुम हो सखि ! और नशीला अम्बर है।

मैं सुप्त कल्पना को कह कह कर अमर कला,
कैसे छोड़ूँ जागृत यथार्थ का हाथ भला,
मैं कभी न घबराया हूँ काली रातों से,
मैं कभी न काँपा हूँ भीषण बरसातों से,
पर इसका अर्थ नहीं है, सुघड़ चाँद पाकर,
उससे भी दो बातें न करें हम मुस्काकर,
भूलो अतीत मत करो भविष्यत की चिन्ता—
यह वर्तमान भी कितना मादक मनहर है।
मैं हूँ, तुम हो सखि ! और नशीला अम्बर है।

आगे आएँगी सखि ऐसी भीषण रातें,
अवसर न मिलेगा करने को भी दो बातें,
इस दुनिया के पहरेदारों की गृद्ध-दृष्टि
पड़ते ही भू लुंठित होगी यह सुखद सृष्टि
इसलिए तुम्हें मैं इतना कह दूँ दीवानी,
इस चन्द्र-निशा की जी भर कर लो अगवानी,
यह क्षण अपने हैं जिनमें हम तुम बैठे हैं—
आगत का क्या विश्वास कि कितना दुखकर है।
मैं हूँ, तुम हो सखि ! और नशीला अम्बर है।

रूप तुम्हारे पास, किन्तु……

बुरा न मानो तो सखि, तुमसे इतना कह दूँ,
रूप तुम्हारे पास, किन्तु मुस्कान नहीं है।

शरद पूर्णिमा है, अम्बर जी भर निखरा है
धरती पर मानो, मादक यौवन बिखरा है
नभ के वक्षस्थल पर चन्दा घूम रहा है
मधु वितरक बन तारों का मुख चूम रहा है
ऐसी मादक रात कहाँ फिर मिल पाएगी
तारों की बारात कहाँ फिर मिल पाएगी
बाध्य करो मत, सखि ! तुम मुझको यह कहने पर
तुम्हें हृदय की धड़कन का अनुमान नहीं है ।।

चाँदी का घट मद से पूरित उसे निहारो
आज लाज का काज नहीं है लाज विसारो
स्वयं सिहर कर बँध जाओ मेरी बाँहों में
एकमेक हो घुल जाओ मेरी चाहों में
मैंने जीवन से चुन चुन भावों की लड़ियाँ
उन्हें सँजोया है ले शब्दों की मृदु कड़ियाँ
तुम्हें देखकर मूक हृदय में हूक उठी है—
गीत नशीले, किन्तु रसीली तान नहीं है।

शुभे, व्यर्थ का मान नहीं कोई सह पाता
गर्वोन्नत भगवान नहीं कोई सह पाता
एक स्नेह की बूंद स्निग्ध करती जीवन को
ममतामय आलोक सौंप देती है मन को
यौवन है, लेकिन यौवन में प्यार नही है
जीवन है, लेकिन उसमें रसधार नही है।
कलाकार की श्रेष्ठ मूर्ति जो मौन खड़ी हो—
लगता है वैसे ही तुममें जान नहीं है।

जहाँ नही है हृदय, करेगी करेगी वहाँ कला क्या !
स्मिति रेखा के बिना जियेगा रूप भला क्या !
आओ मधुर चाँदनी मे हम तुम खो जाएँ
चिर युग से पीड़ित प्राणों की प्यास बुझाएँ
रोको मत, अपनी इच्छाओं को खिलने दो
चंदा की साक्षी में युगल हृदय मिलने दो
स्निग्ध ज्योत्स्ना चंदा की बाँहो में लिपटी—
यह न कहे, इनको यौवन का ध्यान नही है।

कहते हैं चंचल तारे कर मौन इशारे
प्यार सदा होता है जग में बिना विचारे
जहाँ नहीं है रूप, अगर मुस्कान वहाँ है
प्रकृति स्वयं देती, जीवन का दान वहाँ है
देख रहा हूँ, तुम कुछ कहने को आतुर हो
जो कुछ कहना है, कह डालो, आज मुखर हो।
ऐसे क्षण में मधुर मुखरता ही भाती है—
तुम्हें प्रकृति के अन्तर की पहचान नहीं है।

बुरा न मानो तो सखि, तुमसे इतना कह दूँ
रूप तुम्हारे पास, किन्तु मुस्कान नहीं है।।

मानता हूँ प्रिय ! तुम्हारा·······

मानता हूँ प्रिय तुम्हारा भक्त हूँ मैं,
पर किसी का मैं निठुर भगवान भी हूँ ।

तुम उसे क्योंकर मिटाना चाहते हो
क्यों किसी का दिल दुखाना चाहते हो
वह मुझे अपना कहे, कहता रहे प्रिय
जिन्दगी की मौज में बहता रहे प्रिय
क्या कहा तुम ने मिटा कर ही रहूँगा
सच बता दूँ मैं उसे मिटने न दूँगा

समझते हो तुम कि मैं कोमल कमल हूँ—
भूलते हो प्रिय ! प्रबल चट्टान भी हूँ ।
पर किसी का मैं सदय भगवान भी हूँ ॥

मानता हूँ प्रिय तुम्हारा भक्त हूँ मैं,
पर किसी का मैं निठुर भगवान भी हूँ ।

दूर तारों के नगर से चाँद के घर
रह रहे हैं स्वप्न मेरे मौन बन कर
मैं हठीला इस भयावह कालिमा में
दुखद जीवन की सुपरिचित इस अमा में
चढ़ रहा हूँ इन भयावह घाटियों पर
गूँजता जिन में निरन्तर मौत का स्वर

कहते हैं चंचल तारे कर मौन इशारे
प्यार सदा होता है जग में बिना विचारे
जहाँ नहीं है रूप, अगर मुस्कान वहाँ है
प्रकृति स्वयं देती, जीवन का दान वहाँ है
देख रहा हूँ, तुम कुछ कहने को आतुर हो
जो कुछ कहना है, कह डालो, आज मुखर हो।
ऐसे क्षण में मधुर मुखरता ही भाती है—
तुम्हें प्रकृति के अन्तर की पहचान नहीं है।

बुरा न मानो तो सखि, तुमसे इतना कह दूँ
रूप तुम्हारे पास, किन्तु मुस्कान नहीं है॥

पथ बदलना और चलना……

मुझे अपना बनाने की न करना भूल।
पना के पालने में मैं रहा हूँ भूल॥

है यही निश्चित, नहीं बन कर किसी का रह सकूँगा
है यही निश्चित, नहीं बन्धन किसी का सह सकूँगा
तुम स्वयं सोचो, मुझे मेरी जवानी क्या कहेगी—
यदि चला मैं मूँद लोचन, पंथ के अनुकूल।
तुम मुझे अपना बनाने की न करना भूल॥

आज तक मैंने जवानी की कहानी ही कही है
क्योंकि मुझ पर मस्त दरिया-सी रवानी ही रही है
पथ बदलना और चलना काम मेरी ज़िन्दगी का—
मैं प्रगतिमय धार, तुम हो मौन जड़वत कूल।
कल्पना के पालने में, मैं रहा हूँ भूल॥

यह नहीं कहता, किसी से तुम न करना प्यार
मानता हूँ, प्यार के बिन व्यर्थ है संसार
पर नहीं वह प्यार, बन कर धूप, चढ़, ढल जाय—
और मानव की सुनहली सृष्टि कर दे धूल।
तुम मुझे अपना बनाने की न करना भूल॥

मौत के स्वर पर नचाता जिन्दगी को—
चल रहा हूँ क्योंकि मैं तूफान भी हूँ।
पर किसी का मैं मृदुल भगवान भी हूँ॥
मानता हूँ प्रिय तुम्हारा भक्त हूँ मैं,
पर किसी का मैं निठुर भगवान भी हूँ॥

ज़िन्दगी भर एक आदत सी रही है
बात जो मन में उठी सबसे कही है
चाहते हो यदि तुम्हारा बन रहूँ मैं
वेदनाएँ विश्व की हँस हँस सहूँ मैं
तो अमिट विश्वास धारा में नहाकर
साथ मेरा दो हृदय-धन मुस्कराकर
यदि तुम्हारे वास्ते अभिशाप हूँ मैं—
तो किसी के वास्ते वरदान भी हूँ।
प्रिय किसी का मैं सुखद भगवान भी हूँ॥
मानता हूँ प्रिय तुम्हारा भक्त हूँ मैं,
पर किसी का मैं निठुर भगवान भी हूँ।

प्रथम परिचय में मिले थे प्राण! हम जब
सौंप जीवन के दिये अधिकार थे सब
मैं किसी अधिकार का इच्छुक नहीं हूँ
मैं किसी आधार का इच्छुक नहीं हूँ
चाहता हूँ प्यार के दो बोल सुनना
शूलमय पथ से रंगीले फूल चुनना
एक दुर्बलता यही है जिन्दगी की—
क्योंकि मेरे प्राण! मैं इन्सान भी हूँ
पर किसी का मैं सबल भगवान भी हूँ॥
मानता हूँ प्रिय तुम्हारा भक्त हूँ मैं,
पर किसी का मैं निठुर भगवान भी हूँ।

पथ बदलना और चलना.......

तुम मुझे अपना बनाने की न करना भूल।
कल्पना के पालने में मैं रहा हूँ झूल॥

है यही निश्चित, नहीं बन कर किसी का रह सकूँगा
है यही निश्चित, नहीं बन्धन किसी का सह सकूँगा
तुम स्वयं सोचो, मुझे मेरी जवानी क्या कहेगी—
यदि चला मैं मूँद लोचन, पंथ के अनुकूल।
तुम मुझे अपना बनाने की न करना भूल॥

आज तक मैंने जवानी की कहानी ही कही है
क्योंकि मुझ पर मस्त दरिया-सी रवानी ही रही है
पथ बदलना और चलना काम मेरी जिन्दगी का—
मैं प्रगतिमय धार, तुम हो मौन जड़वत कूल।
कल्पना के पालने में, मैं रहा हूँ झूल॥

यह नहीं कहता, किसी से तुम न करना प्यार
मानता हूँ, प्यार के बिन व्यर्थ है संसार
पर नहीं वह प्यार, बन कर धूप, चढ़, ढल जाय—
और मानव की सुनहली सृष्टि कर दे धूल।
तुम मुझे अपना बनाने की न करना भूल॥

मौत के स्वर पर नचाता जिन्दगी
चल रहा हूँ क्योंकि मैं तूफान
पर किसी का मैं मृदुल भगवान
मानता हूँ प्रिय तुम्हारा भक्त
पर किसी का मैं निठुर भगवान

जिन्दगी भर एक आदत सी
बात जो मन में उठी सबने
चाहते हो यदि तुम्हारा द
वेदनाएँ विश्व की हँस हूँ
तो अमिट विश्वास धारा
साथ मेरा दो हृदय-धन
यदि तुम्हारे वास्ते अभि
तो किसी के वास्ते वर
प्रिय किसी का मैं सुखद
मानता हूँ प्रिय तुम्हा
पर किसी का मैं निठुर

प्रथम परिचय में मि
सौंप जीवन के दि
मैं किसी अधि
मैं किसी आधार
चाहता हूँ प्यार के
शूलमय पथ से रंगील
एक दुर्बलता यही है जि
क्योंकि मेरे प्राण! मैं इन्स
पर किसी का मैं सबल भगवान
मानता हूँ प्रिय तुम्हारा भक्त हू
पर किसी का मैं निठुर भगवान भी हूँ

जीवन के इस अभिनव·······

जीवन के इस अभिनव मादक मदिरालय में
दीवाली आई, रात सुहानी ले आई ।।

प्रिय, भावुक, नूतन साकी नें मुस्का कर के
हैं दीप जलाए, सुन्दर नयन नचा कर के
युग युग का तामस, अन्धकार पी जाने को—
दीपों की मनहर पंक्ति खिली, फिर मुस्काई ।
दीवाली आई, 'रात सुहानी ले आई ।।

दीपों का मेला आज लगा है धरती पर
धरती गाती है, मधु स्वर में सौरभ भर कर
यह नन्हे-नन्हे, दीप नशीलें हैं कितनें—
सखि, देख उन्हें, अम्बर की रानी शरमाई ।
दीवाली आई, रात सुहानी ले आई ।।

कुछ ज्ञात नही, फिर कब दीवाली आयेगी
जीवन के पथ पर, शत शत दीप जलाएगी
तब तारों की छाया में, रात अमावस की—
खोजेंगी अपने विगत स्वप्न की अमराई ।
दीवाली आई, रात सुहानी ले आई ।।

मैं विहग उन्मुक्त, जिसका है नहीं गृह द्वार
उड़ रहा हूँ नील नभ में सुदृढ़ पंख पसार
वह रही है थरथराती गात-झंझावात—
धन्य, मुझको मैं रहा उसके सदा प्रतिकूल।
तुम मुझे अपना बनाने की न करना भूल॥

आपदाएँ ही सदा मेरी बनीं महमान
किन्तु, मुझ को दे गईं वे मधु प्रणय के गान
है हृदय में दर्द, फिर भी खिल रहे हैं देवि।
अधर की मृदु वल्लरी पर मधुर स्मिति के फूल।
तुम मुझे अपना बनाने की न करना भूल॥

फूट आई हो भले ही आँसुओं की धार
पर नहीं मानी कभी भी जिन्दगी से हार
है मुझे आदत चलूँगा उसी पथ पर देवि!
विश्व ने जिस पर सँजोए हैं खुशी से शूल।
तुम मुझे अपना बनाने की न करना भूल॥

भूल कर भी तुम न भिक्षुक पर लुटाना प्यार
व्यर्थ में जीवन न कर लेना कहीं तुम भार
प्यार करना भी सभी के है न वस का रोग—
देखना, जीवन न हो जाए कहीं निर्मूल।
तुम मुझे अपना बनाने की न करना भूल॥

तुम गा दो मधुरे जो मन चाहे सो गा दो
अणु अणु, कण कण, पर अपनी मस्ती बिखरा दो
यह सब दीपक प्रिय, एक रात के पाहुन हैं
तुम इन्हें सुना दो, मधुर प्रणय की शहनाई।
दीवाली आई, रात सुहानी ले आई ॥

हमको भी प्रिय, करनी इसकी अगवानी है
यह रात सुनयने ! सब रातों की रानी है
तब साकी के सुन्दर पग पायल झूम उठे—
जब ली उसने यौवन के मद में अँगड़ाई।
दीवाली आई, रात सुहानी ले आई ॥

जब अपना अन्तर खोल दिया आकुल छवि ने
नव गीत सँजोए, अजर, अमर युग के कवि ने
फिर गूंजी उसी क्षण साजों की झंकारों में
मादक रस भीनी तान सुरीली मन भाई।
दीवाली आई, रात सुहानी ले आई ॥

कुछ ज्ञात नहीं, कब रात गई, कब प्रातः मिला
भोली भावुकता में, यौवन का पुष्प खिला,
तब दोनों ने अपनी अन्तर की आँखों से—
देखी प्रिय के उज्ज्वल मानस की गहराई।
दीवाली आई, रात सुहानी ले आई ॥

माँग लो वर आज, फिर.......

आज जीवन में निराशा ही निराशा है।

क्या कहा? दुनिया हमें मिलने नहीं देगी
प्यार का सुरभित सुमन खिलने नहीं देगी
प्यार पथ के पथिक दुनिया में रहे हँसते—
तुम स्वयं सोचो सजन, कितनी दुराशा है।
आज जीवन में निराशा ही निराशा है॥

हाय रे दुर्भाग्य मैं असहाय नारी हूँ
किन्तु फिर भी प्राण, मैं संगिनी तुम्हारी हूँ
पत्र में दिल खोलकर दिखला नहीं सकती—
क्या बताऊँ मिलन की कितनी पिपासा है।
आज जीवन में निराशा ही निराशा है॥

तुम गा दो मधुरे जो मन चाहे सो गा दो
अणु अणु, कण कण, पर अपनी मस्ती बिखरा दो
यह सब दीपक प्रिय, एक रात के पाहुन हैं
तुम इन्हें सुना दो, मधुर प्रणय की शहनाई।
दीवाली आई, रात सुहानी ले आई॥

हमको भी प्रिय, करनी इसकी अगवानी है
यह रात सुनयने! सब रातों की रानी है
तब साकी के सुन्दर पग पायल झूम उठे—
जब ली उसने यौवन के मद में अँगड़ाई।
दीवाली आई, रात सुहानी ले आई॥

जब अपना अन्तर खोल दिया आकुल छवि ने
नव गीत सँजोए, अजर, अमर युग के कवि ने
फिर गूंजी उसी क्षण साजों की झंकारों में
मादक रस भीनी तान सुरीली मन भाई।
दीवाली आई, रात सुहानी ले आई॥

कुछ ज्ञात नह , कब रात गई, कब प्रातः मिला
भोली भावुकता में, यौवन का पुष्प खिला,
तब दोनों ने अपनी अन्तर की आँखों से—
देखी प्रिय के उज्ज्वल मानस की गहराई।
दीवाली आई, रात सुहानी ले आई॥

मांँग लो वर आज, फिर······

आज जीवन में निराशा ही निराशा है।

क्या कहा ? दुनिया हमें मिलने नहीं देगी
प्यार का सुरभित सुमन खिलने नहीं देगी
प्यार पथ के पथिक दुनिया में रहे हँसते—
तुम स्वयं सोचो सजन, कितनी दुराशा है।
आज जीवन में निराशा ही निराशा है॥

हाय रे दुर्भाग्य मैं असहाय नारी हूँ
किन्तु फिर भी प्राण, मैं संगिनी तुम्हारी हूँ
पथ में दिल खोलकर दिखला नहीं सकती—
क्या बताऊँ मिलन को कितनी पिपासा है।
आज जीवन में निराशा ही निराशा है॥

मैं तुम्हारी हूँ मुझे तुम वर यही देना
और मुझको भी कभी तुम याद कर लेना
ओ गगन के चाँद, तुम खिलते रहो प्रतिक्षण
किन्तु अपना तो यहाँ जीवन बुझा-सा है।
आज जीवन में निराशा ही निराशा है।।

.

दूर हूँ तुमसे मुझे जो जी कहे कह लो,
और कुछ दिन प्राण मुझसे दूर तुम रह लो,
माँग लो वर आज फिर देने पड़ेंगे भी
देख लो किस्मत उलटती किधर पासा है।
आज जीवन में निराशा ही निराशा है।।

रात बीती रवि किरण बनकर प्राण तुम आईं
अमरता दे, साथ वह मुस्कान भी लाईं
मैं पथिक जो बन गया था राह का बन्दी
मुक्ति का उसको दिया तुमने दिलासा है।
आज जीवन में निराशा ही निराशा है।।

मानता हूँ मैं कि मेरा साथ तुम दोगी
युद्ध में रथ की धुरी में हाथ तुम दोगी
छाँह बन कर तुम फिरोगी साथ जीवन में
और तुम बिन जिन्दगी की मौन भाषा है।
आज जीवन में निराशा ही निराशा है।।

पर निराशा तो तुम्हें जीने नही देगी
प्रिय अधर की अमरता पीने नही देगी
मिलन की इच्छा करो छोड़ो निराशा को––

प्राण, अपनी जिन्दगी का अन्त आशा है।
क्या हुआ यदि आज जीवन में निराशा है !

प्राण तुम भी.......

प्राण ! तुम भी निकली नादान ।
और मैं भी निकला नादान ।।

सत्य है नही मिलेंगे देवि
एक सरिता के हम दो कूल
किन्तु फिर भी हम दोनों एक
भुलाने की मत करना भूल ।

एक ही लक्ष्य, एक ही ओर ।
हमें करना होगा प्रस्थान ।
प्राण ! तुम भी निकली नादान ।
और मैं भी निकला नादान ।।

देवि ! मैं तो जंगल का कीर
अटपटे, मादक जिसके गीत
और तुम मैना चतुर-सुजान
लिये हो भाव भरा संगीत

निशा में एक डाल पर बैठ।
खोल देते उर के अरमान।
प्राण ! तुम भी निकलीं नादान।
और मैं भी निकला नादान ॥

न जाने किस कारण वश प्रिये !
किये तुमने मुझ पर आक्षेप
वही यदि कर दे उर पर घाव—
घाव पर करना जिसे प्रलेप

इसी क्षण सिहर उठा तन और।
तभी आकुल हो रोये प्राण।
प्राण ! तुम भी निकलीं नादान।
और मैं भी निकला नादान ॥

किन्तु मैं मानव ही तो सुमुखि !
मुझे भी आया तुम पर क्रोध
जिसे मैं अपना जीवन कहूँ
वही फिर मेरा करे विरोध

क्रोध में क्या कह बैठा प्राण !
नहीं अब इसका मुझको ज्ञान।
प्राण ! तुम भी निकलीं नादान।
और मैं भी निकला नादान ॥

ह ! कर बैठा कैसी भूल
एक क्षण हुई साँस तक बन्द
काश ! हो पाता तुमको ज्ञात–
हठीले उर का अन्तर्द्वन्द्व
आज जीवन सागर में सजनि !
एक दम उमड़ पड़ा तूफान।
प्राण ! तुम भी निकली नादान।
और मैं भी निकला नादान ।।

प्रलय की उस हलचल में शुभे !
खो गया जीवन का संगीत
मौन है अब वीणा के तार
सुप्त अब कवि के मीठे गीत
प्रथम दर्शन में ही तो देवि !
हुआ था हृदय-हृदय को दान।
प्राण ! तुम भी निकली नादान।
और मैं भी निकला नादान ।।

कभी यदि अनजाने में तुम्हें
याद आता होगा बेपीर
क्षणिक आह्लाद, बाद में सुमुखि !
नयन भर लाते होंगे नीर
हृदय करता होगा बेचैन।
किसी निष्ठुर का अनुसन्धान।
प्राण ! तुम भी निकली नादान।
और मैं भी निकला नादान

पुरवैया

उलझन

अलि, तुमसे मेरा क्या नाता।
यह समझ नहीं मुझको आता॥

हम कभी न खुल कर मिल पाये।
गूढ भेद न दिल के बतलाये।
प्रिय पथ आलोकित करने को।
हम कभी न दीप जला पाये॥
पर फिर भी तेरी स्मृति में,
अलि अक्षय गीत बना आता।
अलि तुमसे मेरा क्या नाता।
यह समझ नहीं मुझको आता॥

सरिता की बाढ़ मिटे चाहे।
इन नयनों में बादल छाये।
मेरे जीवन में बाढ़ आज।
अब इसको कौन रोक पाये॥
अज्ञात धार में निर्निमेष।
यह जीवन आज बहा जाता।
अलि तुमसे मेरा क्या नाता।
यह समझ नहीं मुझको आता।

तुझ को उसकी पहचान नहीं।
क्या उसको तेरा ज्ञान नही ?
वह तेरे मन्दिर की प्रतिमा।
क्या तू उसका भगवान नही ?

जब जग वह प्रश्न किया करता।
मैं अपना शीश झुका जाता।
अलि तुमसे मेरा क्या नाता।
यह समझ नही मुझको आता॥

तुम सुघड़ सलौनी लता प्रिये !
जिसका सारा जीवन सूना।
मैं तो प्रिय हारिल पंछी हूँ।
है पाप जिसे तुम को छूना॥

आकुल उर अन्तरिक्ष मे ही।
उड़ उड़ कर प्राण गँवा जाता।
अलि तुमसे मेरा क्या नाता।
यह समझ नही मुझको आता॥

अपने में ही जलने वाली।
तुम दीप-शिखा अम्लान प्रिये !
अपने में ही तल्लीन सदा।
मैं पागल कवि का गान प्रिये॥

जो पंख खुले पंछी जैसा।
कुछ ज्ञात न किधर उड़ा जाता ?
अलि तुमसे मेरा क्या नाता।
यह समझ नही मुझको आता॥

मैं कई बार सोचा करता।
यदि अब के मिल पायें, रानी।
दृढ़ होकर तुम से कह दूंगा।
उलझन सुलझा दो दीवानी॥

पर जब मिलते तब ज्ञात नहीं।
पगली यह भाव कहाँ जाता।
अलि तुमसे मेरा क्या नाता।
यह समझ नहीं मुझ को आता॥

जीवन से लड़ते लड़ते जब।
थक जाता, छाती हिल जाती।
तुम भी मुझ सी एकाकिन हो।
तब उस क्षण याद बहुत आती॥

कोई एकाकी पंथी को।
आश्वासन नहीं बँधा पाता ?
अलि तुमसे मेरा क्या नाता।
यह समझ नहीं मुझको आता॥

हा, काश अगर हम मिल पाते।
जीवन की खाई पट जाती।
पथ में जितनी बाधायें थी।
सखि सब की बदली फट जाती॥

या तुम ही मुझे मना लेती।
या मैं ही तुम्हें मना पाता॥
अलि तुमसे मेरा क्या नाता।
यह समझ नहीं - मुझको आता॥

बन्द करना द्वार यदि यह एक क्षण को भूल जाए
मैं न फिर बन्दी रहूँगा जाल कोई भी बिछाए
चीर जाऊँगा नशीले बादलों की छातियों को–
आ मिलूँगा प्राण तुम को प्यार से फिर मुस्कराता,
पंख यदि होते खुले में उड़ तुम्हारे पास आता ॥

भक्त हूँ, पर बन नहीं पाए.......

दीप जैसे टिमटिमा कर मिट गए अरमान मेरे।
भक्त हूँ, पर बन नहीं पाए कभी भगवान मेरे ॥

देखता हूँ पथ, जहाँ तक
दृष्टि मेरी जा रही है
प्रबल आँधी, सृष्टि का
सौन्दर्य पीती आ रही है।
शून्य पथ से लौट आते हैं प्रबल आह्वान मेरे।
भक्त हूँ, पर बन नहीं पाये कभी भगवान मेरे ॥

वह मृदुलतम गीत जिनके
आसरे जीता रहा हूँ।
कल्पना के चषक में
मादक सुरा पीता रहा हूँ
लग रहा है, आज मुझसे दूर हैं वे गान मेरे।
दीप जैसे टिमटिमा कर मिट गए अरमान मेरे ॥

तुझ को उसकी पहचान नही।
क्या उसको तेरा ज्ञान नही?
वह तेरे मन्दिर की प्रतिमा।
क्या तू उसका भगवान नहीं?

जब जग वह प्रश्न किया करता।
मैं अपना शीश झुका जाता।
अलि तुमसे मेरा क्या नाता।
यह समझ नही मुझको आता॥

तुम सुघड़ सलौनी लता प्रिये!
जिसका सारा जीवन सूना।
मैं तो प्रिय हारिल पंछी हूँ।
है पाप जिसे तुम को छूना॥

आकुल उर अन्तरिक्ष मे ही।
उड़ उड़ कर प्राण गँवा जाता।
अलि तुमसे मेरा क्या नाता।
यह समझ नही मुझको आता॥

अपने में ही जलने वाली।
तुम दीप-शिखा अम्लान प्रिये!
अपने मे ही तल्लीन सदा।
मैं पागल कवि का गान प्रिये॥

जो पंख खुले पंछी जैसा।
कुछ ज्ञात न किधर उड़ा जाता?
अलि तुमसे मेरा क्या नाता।
यह समझ नही मुझको आता॥

मैं कई बार सोचा करता।
यदि अब के मिल पायें, रानी।
दृढ़ होकर तुम से कह दूंगा।
उलझन सुलझा दो दीवानी॥

पर जब मिलते तब ज्ञात नहीं।
पगली यह भाव कहाँ जाता।
अलि तुमसे मेरा क्या नाता।
यह समझ नहीं मुझ को आता॥

जीवन से लड़ते लड़ते जब।
थक जाता, छाती हिल जाती।
तुम भी मुझ सी एकाकिन हो।
तब उस क्षण याद बहुत आती॥

कोई एकाकी पंथी को।
आश्वासन नहीं बँधा पाता ?
अलि तुमसे मेरा क्या नाता।
यह समझ नही मुझको आता॥

हा, काश अगर हम मिल पाते।
जीवन की खाई पट जाती।
पथ में जितनी बाधायें थी।
सखि सब की बदली फट जाती॥

या तुम ही मुझे मना लेतीं।
या मैं ही तुम्हें मना पाता॥
अलि तुमसे मेरा क्या नाता।
यह समझ नही - मुझको आता॥

मैं तुम्हारा गीत हूँ……

मैं तुम्हारा गीत हूँ प्रिय ! विस्मरण क्यों कर दिया है ?

आज अपनी मधुर वीणा पर
मुझे लाओ हृदय-धन !
हृदय-वीणा पर तुम्हारी
झूम जाए मधुर थिरकन !

'था सुधा से युक्त, पर तुमने हलाहल भर दिया है।
मैं तुम्हारा गीत हूँ प्रिय ! विस्मरण क्यों कर दिया है ?'

मैं तुम्हारे मधुर कोकिल
कण्ठ में रहता रहा हूँ।
बाँसुरी की सरस ध्वनि में
लहर बन बहता रहा हूँ।

चाहते हो मैं जिऊँ ? पर कौन बिन प्रियवर जिया है ?
मैं तुम्हारा गीत हूँ प्रिय ! विस्मरण क्यों कर दिया है ?

आज जीवन बह रहा है
वेदना का भार लेकर।
तरणि सिन्धु अपार में हूँ,
तुम गए पतवार लेकर।
और शशि ने सिन्धु को भीषण भयावह स्वर दिया है।
मैं तुम्हारा गीत हूँ प्रिय ! विस्मरण क्यों कर दिया है ?

आज नौका सिन्धु की
उन्मत्त लहरों पर उछलती।
बह रही है स्वयं ही
अनजान अगणित पथ बदलती।
उदधि ने तो नीर खारे मे कलेवर हर लिया है।
मैं तुम्हारा गीत हूँ प्रिय ! विस्मरण क्यों कर दिया है ?

क्षीण मत करना हृदय-धन
एक मेरा मधुर सपना।
जिन्दगी भर मैं तुम्हें
कहता रहूँगा मीत अपना।
प्राण कह दो-तू रहे अपना, तुझे वह वर दिया है।
मैं तुम्हारा गीत हूँ प्रिय ! विस्मरण क्यों कर दिया है ?

पंख यदि होते खुले.......

पंख यदि होते खुले मैं उड़ तुम्हारे पास आता
देखता संसार में फिर कौन मुझको रोक पाता ।।

क्या समझता मीत मैं संध्या उषा की लालिमा को
चीर जाता मैं अमावस की भयावह् कालिमा को
रवि किरण जी भर जलाती, गगन की उत्तप्त छाती
पर तुम्हारा प्यार मेरे पंथ को शीतल बनाता
देखता संसार में फिर कौन मुझ को रोक पाता

रूप की रानी मुझे बन्दी बना कर गा रही है
गीत मे प्रिय प्रीत के कुछ भाव से दिखला रही है
मै यहाँ बन्दी मगर मेरा हृदय बन्दी नहीं है–
क्यों नहीं भगवान उस उन्मादिनी को यह् बताता
पंख यदि होते खुले मैं उड़ तुम्हारे पास आता ।।

सोचती हो तुम, तुम्हें मैं छोड़ आया तोड़ बन्धन
प्यार के बन्धन कहो, प्रिय तोड़ पाया कौन सा तन,
जो तुम्हारा मन कहे, आरोप वह मुझ पर लगाओ–
काश होता पास तुम को चीर कर यह दिल दिखाता
देखता संसार में फिर कौन मुझको रोक पाता ।।

याद में बैठी दृगों से प्राण नीर बहा रही हो
है न परदेसी किसी का हृदय को समझा रही हो
किन्तु फिर भी देखती हो राह लेकर चाह मन में–
जब कभी वह भाव आता है तभी मुझको रुलाता
पंख यदि होते खुले में उड़ तुम्हारे पास आता ।।

लो सुनो वह रूप की रानी मनाने आ रही है
प्यार से कूटी हुई चूरी खिलाने आ रही है
मैं सहस्रों बार इस नादान को समझा चुका हूँ
जुड़ चुका है चाँद का तो चाँदनी से मौन नाता
पंख यदि होते खुले में उड़ तुम्हारे पास आता ।।

मैं न दूँगा किन्तु यह पिंजरा सदा देगा गवाही,
भूल से पथ भूल करके आ फँसा था एक राही,
खा गई उसको हठीली नाग-कन्या काल बन कर
मर गया वह भी हठीला प्रिय विरह के गीत गाता
पंख यदि होते खुले में उड़ तुम्हारे पास आता ।।

बन्द करना द्वार यदि यह एक क्षण को भूल जाए
मैं न फिर बन्दी रहूँगा जाल कोई भी बिछाए
चीर जाऊँगा नशीले बादलों की छातियों को—
आ मिलूंगा प्राण तुम को प्यार से फिर मुस्कराता,
पंख यदि होते मुझे मैं उड़ तुम्हारे पास आता ।।

भक्त हूँ, पर बन नहीं पाए·······

दीप जैसे टिमटिमा कर मिट गए अरमान मेरे ।
भक्त हूँ, पर बन नहीं पाए कभी भगवान मेरे ।।

देखता हूँ पथ, जहाँ तक
दृष्टि मेरी जा रही है
प्रबल आँधी, सृष्टि का
सौन्दर्य पीती आ रही है ।
शून्य पथ से लौट आते हैं प्रबल आह्वान मेरे ।
भक्त हूँ, पर बन नही पाये कभी भगवान मेरे ।।

वह मृदुलतम गीत जिनके
आसरे जीता रहा हूँ ।
कल्पना के चषक में
मादक सुरा पीता रहा हूँ
लग रहा है, आज मुझसे दूर हैं वे गान मेरे ।
दीप जैसे टिमटिमा कर मिट गए अरमान मेरे ।।

स्वप्न के आकाश में—
तारे खिले, शशि मुस्कराया
और तब उस क्षण मरण ने
जिन्दगी का गीत गाया
किन्तु सखि! फिर भी न आए स्वप्न के महमान मेरे।
भक्त हूँ, पर बन नहीं पाये कभी भगवान मेरे॥

मैं मिटाकर ही रहूँगा
नियति के दुश्चक्र सारे
मीत! जी सकता नहीं मैं
आज किस्मत के सहारे
क्योंकि, क़िस्मत के करों में दुखित बन्दी प्राण मेरे।
दीप जैसे टिमटिमा कर, मिट गए अरमान मेरे॥

एक दिन था, जब कि मेरे
गीत गाता था जमाना
एक दिन मुझको प्रकृति ने
जिन्दगी का मीत माना
किन्तु अब अभिशाप मुझको बन गए वरदान मेरे।
दीप जैसे टिमटिमा कर, मिट गए अरमान मेरे॥

सोचता हूँ इस तरह जीवन
कहाँ तक चल सकेगा
सोचता हूँ, स्नेह के बिन
दीप कब तक जल सकेगा
मीत, कब तक रह सकेंगे, पंथ के पाषाण मेरे।
दीप जैसे टिमटिमा कर, मिट गए अरमान मेरे॥

'मैं किसी का था.......

मैं किसी का था तुम्हारा हो गया हूँ

प्राण ! तुम बीती हुई बातें न पूछो
लोचनों की स्निग्ध बरसातें न पूछो
मत करो मजबूर कहने को कहानी
मत जगाओ सुप्त हैं स्मृतियाँ पुरानी
मैं किसी के प्यार का पाहुन बना था
जिन्दगी थी मौन मैं कुछ अनमना था
मौन पाहुन, एक दिन पाहन गया बन—
पा तुम्हें फिर मधुर धारा हो गया हूँ।
मैं किसी का था तुम्हारा हो गया हूँ ॥

पा सहारा में सहारा हो गया हूँ

तुम कहीं आकर न प्यासे लौट जाओ
स्वयं रोवो और मुझको भी रुलाओ
मैं सदा चलता रहा सूनी डगर पर
लक्ष्य खोकर, लक्ष्य के विपरीत होकर
अब नहीं मैं और रोना चाहता हूँ
अब न अपना आप खोना चाहता हूँ
बन लहर मँझधार में रहता रहा हूँ—
पा किनारा, अब किनारा हो गया हूँ।
मैं किसी का था तुम्हारा हो गया हूँ॥

बन तुम्हारा, बहुत प्यारा हो गया हूँ

नील नभ चन्दन जड़ित मधुमास लाया
शुष्क अधरों पर तरलतम हास छाया
पूर्णिमा के सिन्धु में बहता रहा हूँ
मैं किसी का चाँद बन रहता रहा हूँ
यदि अमावस आ गई तुम क्या करोगी
मैं रहूँगा दूर, तुम आहें भरोगी
तुम गगन की नीलिमा बनकर जियो प्रिय!
इसलिए मैं एक तारा हो गया हूँ।
मैं किसी का था तुम्हारा हो गया हूँ॥

तुम मुझे वरदान देने को चले थे
किन्तु चिर अभिशाप देकर ही टले हो।

देख कर मुझ को तभी कहने लगे तुम
प्राण बनकर देह में रहने लगे तुम
मीत ! युग युग तक इकट्ठे ही चलेंगे
वेदना के विश्व में फूले फलेंगे
• मैं तभी विश्वास की पतवार पाकर
• नाव को मँझधार में था खींच लाया
तुम मुझे सुख शान्ति देने को चले थे
किन्तु चिर सन्ताप देकर ही टले हो

• आज दिल का दर्द दूना हो गया है
कल्पना का विश्व सूना हो गया है
जानता हूँ नाव दलदल में फँसी है
किन्तु मुझको आ रही फिर भी हँसी है
दूर सागर में जवानी की उमंगें...
कह रही हैं 'हार भी है जीत भी है'
तुम चले थे सौंप अपना आप देने
किन्तु मेरा आप लेकर ही टले हो

सो गए हैं आज सब अरमान मेरे
रह गये हैं सब अधूरे गान मेरे
मैं तुम्हारा था कभी, यह भूल जाना
प्यार करने का न अब करना बहाना
क्या तुम्हें मुझसे व मेरी जिन्दगी से
मैं जिऊँगा क्योंकि मैं इन्सान ठहरा
तुम चले थे आह ! अपने पुण्य देने
किन्तु अपने पाप देकर ही टले हो

है तुम्हें सौगन्ध मेरी मान जाना
अब किसी निर्दोष को तुम मत सताना
प्यार का व्यापार मत करना हृदयधन!
तोड़ देना मत किसी अनजान का मन
हाय ! टूटा दिल नहीं जुड़ता किसी का
प्यार का रहना अधूरा मौत समझो
तुम चले थे मिलन की दुनिया बसाने
किन्तु करुण विलाप देकर ही टले हो

भूल पाए क्या किसी को ?

मैं किसी की याद में हूँ, मैं किसी की याद हूँ ।

मानिनी के मान के आगे, कहो, क्यों कर झुकूँ मैं ।
मैं प्रभञ्जन हूँ, निरन्तर चल रहा हूँ, क्यों रुकूँ मैं ?
मानता हूँ प्यार के बिन, मैं न जग में जी सकूँगा
सोचता हूँ, पर गरल के घूंट कैसे पी सकूँगा
मैं कभी आबाद हूँ, पर आज तो बरबाद हूँ ।
मैं किसी की याद में हूँ, मैं किसी की याद हूँ ।।

जो किया, अच्छा किया, इसका नहीं कोई गिला
किन्तु, फिर भी सोचता हूँ, प्यार करके क्या मिला ?
मान जाऊँ मैं, मगर यह दिल नहीं है मानता—
क्या करूँ, प्रिय बिन नहीं रहना अभी यह जानता
मैं कभी आह्लाद था, पर आज तो अवसाद हूँ ।
मैं किसी की याद में हूँ, मैं किसी की याद हूँ ।।

बिंध चुके हैं प्राण मेरे और बंदी श्वास हैं
मौन जड़वत हो गया हूँ, आ रहे उच्छ्वास हैं
लोचनों का नीर भी है लोचनों में सो गया
नीड़ मेरा, इस प्रलय की रात में है खो गया
आज तो मैं बन गया साकार ही उन्माद हूँ।
मैं किसी की याद में हूँ, मैं किसी की याद हूँ ॥

विश्व ने मुझसे कहा—"गम दूर कर ले, जाम पी
और फिर हँसकर बसा ले, नई दुनिया प्यार की"
है बहुत आसान कहना, किन्तु करना है कठिन—
भूल पाए क्या किसी को प्यार के उन्मत्त क्षण ?
स्वयं से ही कर रहा मैं आज वाद विवाद हूँ।
मैं किसी की याद में हूँ, मैं किसी की याद हूँ ॥

प्रात पीछे जा चुका है, और सन्ध्या दूर है
तप्त मरुथल है, गगन में सूर्य अतिशय क्रूर है
और साथी साथ देने से हुआ मजबूर है,
चल रहा हूँ, किन्तु मेरा गात चकनाचूर है
सुन रहा अति ध्यान से, निज हृदय की फरियाद हूँ।
मैं किसी की याद में हूँ, मैं किसी की याद हूँ ॥

आज फिर पथ पर.......

आज फिर पथ पर अचानक मिल गए हम मीत ।
हो उठी उर-वीण झंकृत, ले मधुर संगीत ।।

दृग मिले, पग रुक गए, सिहरे हृदय-जलजात
प्रथम कुछ संकोच, फिर कुछ झिझक, फिर कुछ बात
बात से पहले, अधर पर आ गई मुस्कान—
अर्थ जिसका यह, अभी तक जी रही है प्रीत ।
हो उठी उर-वीण झंकृत, ले मधुर संगीत ।।

यों लगा मानो कि मावस की नगरिया छोड़
आ गया हो दूज का चंदा, सुघड़, बेजोड़
क्षीण औ' कृशकाय, निज प्रिय के विरह में लीन
छा गये वातावरण पर मृदु सलोने गीत ।
आज फिर पथ पर अचानक, मिल गए हम मीत ।।

लोचनों में झलकता था प्रिय मिलन का चाव
कर न पाए व्यक्त तुम अपने हृदय के भाव
और मैं भी एक अपराधी सदृश था मौन—
हृदय होता जा रहा था स्वयं के विपरीत।
हो उठी उर-वीण झंकृत, ले मधुर संगीत॥

पंथ पर परिचित, अपरिचित मानवों की भीड़
जानते थे कुछ, हमारे हैं अलग दो नीड़
एक इंगित पर तुम्हारे, हो लिया मैं साथ—
लौट आया फिर युगों के बाद आज अतीत।
हो उठी उर-वीण झंकृत, ले मधुर संगीत॥

कल्पना खिलने लगी, हँसने लगा मधुमास
बह उठा, तव सुरभि से भीगा हुआ वातास
भूल का अवसाद बनकर, मेह बरसा देवि—
लग रहा था, हार बनने जा रही है जीत।
आज फिर पथ पर अचानक मिल गए हम मीत॥

·यह बात किसी से मत कहना·······

मैं तेरे पिंजरे का तोता, तू मेरे पिंजरे की मैना।
पर बात किसी से मत कहना ॥

मैं तेरी आँखों में बन्दी
तू मेरी आँखों में प्रतिक्षण
मैं चलता तेरी साँस साँस
तू मेरे मानस की धड़कन
मैं तेरे तन का रत्नहार, तू मेरे जीवन का गहना ॥
यह बात किसी से मत कहना ॥

मैं तेरे सपनों का राजा
तू मेरे सपनों की रानी
इस जग से दूर बसा लेंगे
हम अपनी दुनिया दीवानी
अपनी उस सुन्दर दुनिया में, हमको है जीवन भर रहना।
पर बात किसी से मत कहना ॥

हम युगल परोरू हँस लेंगे
कुछ रो लेंगे कुछ गा लेंगे
हम बिना बात रूठेंगे भी
फिर हँस कर तभी मना लेंगे

अन्तर में उगते भावों के जज्जात किसी से मत कहना।
यह बात किसी से मत कहना ॥

क्या कहा ! कि मैं तो कह दूँगी !
कह देगी तो पछतायेगी।
पगली इस पापी दुनिया में
बिन बात सताई जायेगी

पीकर प्रिय अपने नयनों की बरसात, विहँसती ही रहना।
पर बात किसी से मत कहना ॥

मेरे पिंजरे का द्वार खुला,
जब उड़ना चाहो, उड़ जाना
स्वच्छंद कहाकर चल फिर कर
जब आना चाहो, आ जाना

पग पग पर बन्धन पड़े हुए दुख पर दुख भी होगा सहना।
पर बात किसी से मत कहना ॥

यह माना, जब तुम जाओगी
जीवन मेरा मिट जायेगा
यह पागल प्राण पखेरू भी
ऊँची उड़ान उड़ जायेगा

पर दुख क्या, मेरे प्राणों ने युग युग से सीखा है दहना।
यह बात किसी से मत कहना ॥

हम युगों युगों के दो साथी
अब अलग अलग होने आये
कहना होगा तुम तो पत्थर
पर मेरे लोचन भर आये

पगली, इस जग के अतल सिन्धु में अलग अलग हमको बहना
पर बात किसी से मत कहना ॥

• पर काट दिए अब कहती हो·······

पर काट दिये अब कहती हो
उड़ जा इस वन से दीवाने !

पहले क्यों उड़ते पंछी पर
सखि ! जाल अनूपम डाला था
फँस गया तुम्हारे फंदों में
पंछी ही भोला भाला था
वह समझा था अमृत के कण
पर वे निकले विष के दाने ।

पर काट दिये अब कहती हो
उड़ जा इस वन से दीवाने ।।

मैं अपने पथ पर चलता था
तुम अपने पथ पर ले आईं
माना सखि ! मेरे मानस की
पीड़ाएँ तुम ने सहलाईं
पर अब क्यों कहती हो मुझ से
हट जा इस पथ से मस्ताने ।

पर काट दिये अब कहती हो
उड़ जा इस वन से दीवाने ।।

सब संगी साथी छोड़ देवि !
बस साथी तुम्हें बनाया था
केवल इस निर्मम जीवन में
तुम से ही प्रेम निभाया था
सोचा था लम्बा जीवन है
हम हिल-मिल गा लेंगे गाने ।

पर काट दिये अब कहती हो
उड़ जा इस वन से दीवाने ।।

मैं थका थकाया आता था
सहलाती थीं मेरे तन को
मैं जगती से होता निराश
बहलाती थीं मेरे मन को
कहती थीं मन के मीत ! आज
तुम बने हुए क्यों अनजाने !

पर काट दिये अब कहती हो
उड़ जा इस वन से दीवाने ।।

बातों-बातों में ही उस दिन
हमने सखि ! लड़ने की ठानी
कुछ भाग्य नही था ठीक
और कुछ थी दोनों की नादानी
नागिन बन तुम फुफकार उठीं
लग गई तभी विष फैलाने !

पर काट दिये अब कहती हो
उड़ जा इस वन से दीवाने ।।

मैं उड़ न सका, मैं चल न सका
मुझ में न रही थी शक्ति देवि
तुम चली गईं तुममें न रही थी
मेरे प्रति कुछ भक्ति देवि !
पर पगली बीते जीवन के
कुछ हाल न जग को बतलाने !

पर काट दिये अब कहती हो
उड़ जा इस वन से दीवाने ।।

जीवन की धूमिल संध्या में
जब याद तुम्हारी आ जाती
मन कहता प्रतिक्षण सुखी रहे
हो जहाँ कहीं मेरा साथी
तुम मुझ को भूल गई, पर मैं—
क्यों लगा तुम्हें सखि बिसराने !

पर काट दिये अब कहती हो
उड़ जा इस वन से दीवाने ।।

माना हम दोनों दूर-दूर
माना हम दोनों पास नहीं
माना बिछुड़ों के मिलने का
इस जीवन में विश्वास नहीं
फिर भी सपनों में कभी-कभी
आ जाना मन को बहलाने !

पर काट दिये अब कहती हो
उड़ जा इस वन से दीवाने ।।

मनुहार !

इस जगती में आकर मैंने
मनुहार न करना सीखा है।

तुम भला प्रेम को क्या जानो
कोई प्रेमी हो पहिचाने
कह साधक एक हमारा तू
बन गए हृदय-धन मनमाने
अभिमान भरा यह प्रेम यहाँ
स्वीकार न करना सीखा है।

इस जगती में आकर मैंने
मनुहार न करना सीखा है॥

माना, तुम मेरे प्रियतम हो
माना, मैं एक पुजारी हूँ
तुम प्रतिमा हो, मन मन्दिर की
मैं सुन्दर कला तुम्हारी हूँ
पर तुम्हें रिझाने को मैंने
शृंगार न करना सीखा है।

इस जगती में आकर मैंने
मनुहार न करना सीखा है॥

मैं कितने गीत सुना बैठा
अब गीत सुना दो तुम अपना
मैंने जितने सपने देखे
उनमें देखा प्रियतम अपना
वह कौन साहसी, मुझे कहे
तू प्यार न करना सीखा है।

इस जगती मे आकर मैंने
मनुहार न करना सीखा हूँ॥

मैं जिधर चलूँ पथ उधर चले
मैं काया हूँ पथ छाया है
आ देव, तुम्हारे मन्दिर मे
छाया को आज मिटाया है
मेरा साथी, पथ या तुम हो,
इनकार न करना सीखा है।

इस जगती में आकर मैंने
मनुहार न करना सीखा है॥

इच्छा हो तो अपना लेना
इच्छा हो तो ठुकरा देना
मेरे इस उन्मादीपन पर
इच्छा हो तो मुस्का लेना
तुम अपने हो, अपनों से प्रिय
तकरार न करना सीखा है।

इस जगती में आकर मैंने
मनुहार न करना सीखा है ।।

है मूक आज उर की वीणा
हैं टूट गईं इस की तारें
क्या कहा ! सुनानी ही होंगी
तुम को वीणा की झंकारें
यह झूठ बात ! मैंने झूठा
इकरार न करना सीखा है।

इस जगती में आकर मैंने
मनुहार न करना सीखा है ।।

मैं लाखों जीवन छोड़ चुका
मैं लाखों बन्धन तोड़ चुका
युग बीत गए, तब से ही मैं
प्रिय ! तुमसे नाता जोड़ चुका
पर मुँह पर कुछ, मन में कुछ, यह–
व्यवहार न करना सीखा है।

इस जगती में आकर मैंने
मनुहार न करना सीखा है।।

अब मरुथल हूँ......

कुछ ज्ञात नहीं, अब क्यों तुम भरने आई हो मधु का प्याला,

मैं मधुवन था ,
मेरे जीवन के नन्दन में थे रंग विरंगे फूल खिले,
चिड़ियां चहकीं, पक्षी बोले, कलियां महकीं, अलि विहँस मिले,

तब एक दिवस ,
तुम मस्त पवन बन कर आई, बन कर प्रिय मधु ऋतु मतवाली,
तब मेरे जीवन उपवन की सखि झूम उठी डाली डाली,

पर क्या देखा—
वह सपना था, तुम करका घन, तुम आंधी थी तूफान लिये
तुम प्रलय निशा, तुमने मेरे तब मिटा सभी अरमान दिये

मैं मधुवन था, मधुवन को तुमने मरुस्थल प्रिये बना डाला,
अब ज्ञात नही फिर क्यों तुम भरने आई हो मधु का प्याला ।।

अब मरुथल हूँ ,

मेरे जीवन के ऊसर में तृण मात्र नही है हरियाली,
मुझको अब स्वयं नही भाती अपनी सूरत भोली भाली,

अनजाने में ,

जब रस का निर्झर समझ मुझे आती है कोई मृगनयनी,
तब देख मुझे उजड़ा उपवन रो पड़ती है वह पिक वयनी,

अब फिर तुम क्यों—

यह चाह रही हो कोई भी आ सके न मेरे जीवन में
तुम सत्य सत्य बोलो निठुरे, क्या बात समाई है मन में,

थी कभी पूर्ण, अब सूनी है मेरे जीवन की मधुशाला ।
यदि चाहो तो भर सकता हूँ मैं अब भी आँसू से प्याला ॥

अब फिर मुझको ,

अपने इस सूने जीवन का एकाकीपन हरना होगा ।
जीवन के नीरस मरुथल में रस का झरना भरना होगा ॥

छा जायेगी—
जीवन के दोनों कूलों पर अतिशय कोमलतम हरियाली ।
हो मन्त्र मुग्ध सी आयेगी फिर सुन्दर मृगनयनों वाली ॥

तब गूँजेंगे—

वह मधु-मतवाले मत्त भँवर फिर शोर मचायेंगी चिड़ियाँ
मेरे कमलों की बतला दूँ सब सिहर उठेंगी पंखुड़ियाँ ॥
मेरा मरुथल बन जायेगा, सखि फिर से मधुवन मतवाला ।
तब चाहो तो आकर मधुरे ! तुम भर लेना मधु का प्याला ॥

दुःख के क्षण

चढ़ रहा है अतिशय ज्वर मुझे
पड़ा हूँ कमरे में चुपचाप !

तप रहा है अंगारे सदृश
आज यह शीतल सुघड़ शरीर
भर रही है प्राणों में प्यास
भर रहा है नयनों में नीर
आज मुझ मानव की बेबसी
दे रही है मन को संताप।

चढ़ रहा है अतिशय ज्वर मुझे
पड़ा हूँ कमरे में चुपचाप ॥

गली में इकतारे पर छेड़
दिया किसने जीवन का गीत
जगत में कौन किसी का सगा
जगत में कौन किसी का मीत
हृदय में उठ-उठ भाव नवीन
कर रहे हैं जीवन का माप।

चढ़ रहा है अतिशय ज्वर मुझे
पड़ा हूँ कमरे में चुपचाप॥

याद आते हैं मुझको आज
सुनहले कुण्डल, लोल कपोल
वचन मे बँधी सजनि की लाज
लाज में बँधे सजनि के बोल
निठुर, मत जाना मुझको भूल
निठुर मत दे देना अभिशाप!

चढ़ रहा है अतिशय ज्वर मुझे
पड़ा हूँ कमरे में चुपचाप॥

तुम्हारे अधरों पर प्रिय प्राण!
सजूंगी, बनकर सुन्दर वेणु!
कही चुभ जाय न प्रिय को शूल,
बनूंगी मै प्रिय पथ की रेणु
तुम्हें दे दूंगी अपने पुण्य
बाँट लूंगी में प्रिय के पाप!

चढ़ रहा है अतिशय ज्वर मुझे
पड़ा हूँ कमरे में चुपचाप॥

हो रहा है माथे में दर्द
कह रही हैं तस्वीरें मौन
रही कहने को केवल बात
बाँटने आया सुख दुख कौन ?
आज पीड़ा से पीड़ित माथ
दबाता हूँ मैं अपने आप ।
चढ़ रहा है अतिशय ज्वर मुझे
पड़ा हूँ कमरे में चुपचाप ।।

चाहता हूँ निद्रा आ जाय
चार क्षण जाऊँ जीवन भूल
धार में बहते को मिल जाय
अचानक सुखद शान्तिमय कूल
स्वप्न में ही सम्भव सुन पड़े
पुरानी पहचानी पदचाप ।
चढ़ रहा है अतिशय ज्वर मुझे
पड़ा हूँ कमरे में चुपचाप ।।

अब भी कभी-कभी······

अब भी कभी-कभी नयनों में सावन घन घिर आते हैं
अब भी कभी-कभी सपनों में मीत बनाये जाते हैं ।।

उस दिन जब अपने हाथों निर्मित दुनिया दे व्याधि गई,
मेरे चिरपोषित अरमानों की बन तभी समाधि गई,
वे मादक अरमान अभी तक भूल नहीं मुझ को पाये

उन पर मृदु आशा के अब भी दीप जलाये जाते हैं ।
अब भी कभी-कभी नयनों में सावन घन घिर आते हैं ।।

मैं भी मरु का मृग बन करके भटका हूँ जग के पथ पर
कितनी बार उलहना मुझ को दे बैठे हैं तृषित अधर
बहुत निकट से देख चुका हूँ पास मृत्यु को मैं बैठे–

फिर भी कभी-कभी मृग मरु में चरण बढ़ाये जाते हैं
अब भी कभी-कभी नयनों में सावन घन घिर आते हैं ॥

जग कहता है अब गीतों में पहले जैसा प्यार नहीं,
वह मीठी सी जलन नहीं है, वह मादक मनुहार नहीं,
वह अल्हड़ संगीत नहीं है, यौवन की पहचान नहीं,

फिर भी कभी-कभी चिर जीवित गीत बनाये जाते हैं
अब भी कभी-कभी नयनों में सावन घन घिर आते हैं ॥

यह न समझना मैंने जीवन में भगवान नहीं माना––
था माना भगवान, मगर उसका अभिमान नहीं माना
रूठों को तो आज तलक मैं नहीं मनाना सीख सका––

पर उनकी स्मृति पर भावों के पुष्प चढ़ाये जाते हैं,
अब भी कभी-कभी नयनों में सावन घन घिर आते हैं ॥

जग कहता है कोकिल जैसी वह मदमाती तान कहाँ ?
जन-मन की पीड़ा हरने वाले, मधु सिंचित गान कहाँ ?
बहुत गा चुका हूँ अपने औ' दुनिया वालों के आगे

अब तो गा गा कर अपने दुःख दर्द रिझाये जाते हैं
अब भी कभी-कभी नयनों में सावन घन घिर आते हैं ॥

कभी गगन का चाँद सलौना मुझसे मिलने आता था
पर्ण कुटी का कोना-कोना ज्योतिर्मय हो जाता था
यह कल की ही बात हो गई लाखों वर्ष पुरानी सी

फिर भी पलकों के सुन्दर पाँवड़े बिछाये जाते हैं
अब भी कभी-कभी नयनों में सावन घन घिर आते हैं ।।

सब कुछ हुआ मगर जीवन का फिर भी हुआ विकास घना
क्योंकि मुझे अपने पर हरदम रहता है विश्वास घना
वे सब अमृत बन कर ही लगते हैं मेरे जीवन को—

दुनिया के द्वारा जो विष के घूंट पिलाये जाते हैं
अब भी कभी-कभी नयनों में सावन घन घिर आते हैं
अब भी कभी-कभी सपनो में मीत मनाये जाते हैं ।।

•प्रिय स्मृति वन उन्माद······

प्रिय स्मृति, वन उन्माद, सताती रही रात भर।

बहुत पुरानी बात, स्वप्न मे मीत मिले थे
हृदय गगन में देवि ! रुपहले फूल खिले थे
सचमुच एक स्वप्न ही तो था मिलन हमारा
कुछ क्षण पीछे रहा न जिसका कूल-किनारा
जग के बहकावे से मुझको भूल गई तुम
जहाँ खिलीं वन फूल, वहीं बन शूल गई तुम
पहले तुमने प्यार दिया, पीछे पर छेदे—

विवश हृदय की कसक जगाती रही रात भर।
प्रिय स्मृति, वन उन्माद, सताती रही रात भर॥

बड़ी पुरानी बात रुलाती रही रात भर

विदा समय धीरे से बोलीं—चाँद सलौने
यह दुनिया कर देगी, तुम पर जादू-टोने
इस दुनिया से साजन, अपना आप बचाना
और अभागिन के धन जल्दी वापिस आना
दो मुझको स्मृतिचिह्न! हाय तुमने फैलाए
रोके बहुत, किन्तु चारों लोचन भर आए
अधरों ने तब चूस लिया आँखों का पानी

उस चुम्बन की जलन, जलाती रही रात भर।
बड़ी पुरानी बात रुलाती रही रात भर॥

किस्मत अपना रूप दिखाती रही रात भर

हार गईं तुम दुनिया की बातों के आगे
मात हो गई, तीखे आघातों के आगे
दुनिया बोली—कवि से इसने प्यार रचा है
वह कवि, जिसने स्वप्नों का संसार रचा है
कवि, परदेसी इनका भी है कहीं भरोसा
जगती के हर प्राणी ने ही इनको कोसा
जादूगरनी स्वयं फँसी जग के धोखे में

यह अनहोनी बात हँसाती रही रात भर।
किस्मत अपना रूप दिखाती रही रात भर॥

प्रिय आँखों की धार बुलाती रही रात भर

कई युगों के बाद अचानक भूले भटके
वही पुरातन ठौर देख, मेरे पग अटके
क्या देखा, तुम दरवाजे में खड़ी हुई हो
जैसे प्रस्तर मूर्ति कहीं पर जड़ी हुई हो
सागर में तूफान उठा, मोती बह आए
चली गईं, तुम प्राणों में अंगार दबाए
पढ़ करके उद्विग्न हृदय की भोली भाषा

आशा अपने फूल खिलाती रही रात भर।
प्रिय आँखों की धार बुलाती रही रात भर॥

• तुम गिन-गिन कर प्रतिशोध········

तुम गिन-गिन कर प्रतिशोध चुका लो अपने!

रह जाय न कोई कोर कसर फिर बाकी
तुम धूल बना दो मेरी इस दुनिया की
तुम आज मिटा दो फिर मेरा अपनापन
तुम जैसे चाहो ! आज कुचल दो जीवन

पर आह नहीं निकलेगी मेरे मुख से ··
तुम जितने चाहो जुल्म बढ़ा लो अपने
तुम गिन-गिन कर प्रतिशोध चुका लो अपने ।।

तुम आशाओं के फूल खिला लो अपने !
मेरे उपवन में पतझड़ ही रहने दो
जग की निर्ममता मुझ को ही सहने दो
मेरे गायन में भरा हुआ है क्रन्दन
मेरी ममता के टूट चुके हैं बन्धन

रहने दो इस जीवन में घोर अमावस ··
तुम हँसी खुशी सब दीप जला लो अपने !
तुम आशाओं के फूल खिला लो अपने ।।

तुम मणि रत्नों से अंग सजा लो अपने !

हम दोनों का तो मिलन एक सपना था
यह भूलो ! तुम, मेरा कोई अपना था
दीवानों से मत रानी प्रेम बढाना
दीवानो ने झुकना न कभी भी जाना

मैं केवल पगली कह कर मुस्का दूंगा ··
तुम जितने चाहो रूप बना लो अपने !
तुम मणि रत्नों से अंग सजा लो अपने ।।

तुम आसमान में चाँद चढ़ा लो अपने !

रहने दो मेरे अम्बर पर घन काले
विद्युत जैसी जलती वेदना संभाले
जिस दिन बरसेंगे दुनिया हर्षायेगी
गीतो की खेती अम्बर छू जायेगी

उस दिन प्राणों का दर्द कहेगा तुम से ··
अब जाओ रूठे मीत मना लो अपने
तुम गिन गिन कर प्रतिशोध चुका लो अपने ।।

स्वप्न और जागरण

स्वप्न में हो तुम जितनी निकट
जागरण में उतनी ही दूर।

तुम्हारे नील नयन सुकुमारि
देखते हैं जब भर अनुरक्ति !
सोचता हूँ मैं उस क्षण देवि !
साधना में है कितनी शक्ति।
स्वप्न में आने को जो प्राण !
तुम्हें कर देती हैं मजबूर।
स्वप्न में हो तुम जितनी निकट
जागरण में उतनी ही दूर ॥

लगाए जो जीवन में घाव
स्वप्न में करती हो उपचार
जागरण में है जितनी घृणा
स्वप्न मे पगली उतना प्यार
स्वप्न में जितनी करुणामयी
जागरण मे उतनी ही क्रूर।
स्वप्न में हो तुम जितनी निकट
जागरण में उतनी ही दूर ॥

चाहता हूँ मेरा उन्माद
एक लम्बा सपना बन जाय
उसी में मैं खो जाऊँ देवि!
न आकर कोई मुझे जगाय
सुखद दुनिया को मेरी, करे
न आकर कोई चकनाचूर।

स्वप्न में हो तुम जितनी निकट
जागरण में उतनी ही दूर॥

याद हैं मुझे तुम्हारे बोल
विश्व से रहता हूँ भयभीत
जागरण तो है मेरी मौत
स्वप्न है मेरे मन का मीत
न विरही हृदय कभी मिल सकें
यही है दुनिया का दस्तूर।

स्वप्न में हो तुम जितनी निकट
जागरण में उतनी ही दूर॥

काश! मेरी पलकें मुँद जायँ
रहे सपना जीवन पर्यन्त
एक दिन उसमें ही हो जाए
देवि, मेरे जीवन का अन्त
स्वप्न में तो मिलने दो निठुर!
मुझे जीवन के सुख भरपूर!

स्वप्न में हो तुम जितनी निकट
जागरण में उतनी ही दूर॥

—मैं कब तक देखूँ राह……

मैं कब तक देखूँ राह तुम्हारी, तुम्हीं कहो।

सम्भवतः तुम को ज्ञात नहीं यह जीवन है,
इसमें रोने की बात नहीं यह जीवन है,
जग रुक जाए जीवन की गति न कभी रुकती,
जग झुक जाए मानव की मति न कभी झुकती,
संध्या के अरुण कपोलों की सुन्दर रेखा—
कहती है मीत ! प्रतीक्षा कर के क्या देखा,

यदि तुम्हें नहीं है मुझ से मिलने की इच्छा——
क्यों मुझको होगी चाह तुम्हारी, तुम्हीं कहो।
मैं कब तक देखूँ राह तुम्हारी, तुम्हीं कहो॥

माना तुमको है नाज जवानी पर अपनी,
मेरी भी अपने लिये भावना यही बनी,
मैं युग स्रष्टा, युग द्रष्टा, युग निर्माता हूँ,
अपने गीतों से अपना मन-बहलाता हूँ,
चिन्ता न मुझे दुनिया की, दुनिया वालों की,
चिन्ता न मुझे चन्दन से लिपटे व्यालों की,

यदि तुम्हें नही है मेरे मानव से ममता--
मुझ को क्यों हो परवाह तुम्हारी, तुम्हीं कहो,
मैं कब तक देखूँ राह तुम्हारी, तुम्ही कहो ॥

'तुम रोओ दुनिया कह देगी मोती ढलके,
मैं रोऊँ दुनिया कह देगी जल-कण छलके,
दुनिया के निर्णय पर मत अपनापन तोलो,
आँसू-आँसू में क्या अन्तर तुम ही बोलो---
चाहे कोई भिक्षुक रोवे चाहे रानी
आँखों से तो निकलेगा खारा ही पानी'

यदि तुम न समझ सकती हो मेरे अन्तर को---
क्यों समझूँ अन्तर्दाह तुम्हारी, तुम्ही कहो;
मैं कब तक देखूँ राह तुम्हारी, तुम्ही कहो ॥

व्यर्थ मत अपनी कसम……

व्यर्थ मत अपनी कसम मुझ को दिला—
यह कसम क्या रोक पायेगी मुझे ?

क्या कहा—है अति भयावह यह डगर
अन्त तक आता नही कोई नगर
मानता हूँ मैं कि पथ अनजान है
किन्तु प्रिय ! किससे यहाँ पहचान है
अगर राही राह से ही डर गया,
तो समझ लो लक्ष्य उसका मर गया

सिन्धु में उठती हुई भीषण लहर—
चूम करके लौट जायेगी मुझे

सोच पगली एक दिन का पाहुना
जिन्दगी मे कब किसी का प्रिय बना
जिन्दगी जिसकी कटी हो राह में
क्या फँसेगा वह किसी की चाह में
चाह जिसकी हिम शिखर को चूमना
अथक-पंछी वन गगन में घूमना

राह मे बहती हुई शीतल पवन—
गीत जीवन के सुनायेगी मुझे ॥

मानता हूँ राह आखिर राह है
राह को कब पथिक की परवाह है
क्या कहा प्रिय पथिक भी इन्सान है
पथिक को भी प्यार की पहचान है
ठीक है प्रिय सब मुझे मंजूर है
किन्तु चलना पथिक का दस्तूर है

बन तुम्हारी याद सम्बल राह का—
कुछ कदम आगे बढ़ायेगी मुझे ॥

अगर मधुरे ! मिल गई मंजिल कही
खिल उठेगी हृदय की कलिका वहीं
गीत गूंजेंगे मधुर संगीतमय
प्रकृति में लहरा उठेगी एक लय
और पंथी जिन्दगी के साज पर
छेड़ देगा साधना का एक स्वर

भावना के उस मधुर आलोक में—
कल्पना पाहुन बनायेगी मुझे ॥

होली के दिन बरसात·······

होली के दिन बरसात कहाँ से आई ?
यह रंग रंगीली प्रात कहाँ से आई ?

तुम आई सतरंगी चूनर फहरातीं ।
संग में थीं सखियाँ यौवन से मदमातीं ।
मैं कवि, लेकर नयनों में स्वप्न सजीले—
था खोज रहा निज जीवन की अमराई ।।
होली के दिन बरसात कहाँ से आई ?

कानों ने इतना सुना "चाँद सोता है ।
सखि! देख इसे आह्लाद मुझे होता है ।
यह दो दिन का पाहुन है मन को भाया—
मैं पाकर के अपना प्रियतम बौराई ।"
यह रंग रंगीली प्रात कहाँ से आई ?

इतने में झुक कर मल कपोल पर रोली ।
हँस कर बोली "चल पाहुन खेलें होली ।
चल जीवन का सन्देश तुझे दिखलाऊँ,
है डगर डगर पर नई जवानी छाई ।"
होली के दिन बरसात कहाँ से आई ?

मैंने देखा, जग जीवन झूम रहा है।
मस्ती का सागर तट को चूम रहा है।
जीवन के सब दुख भूल चुका है मानव।
छाई है सबके जीवन पर तरुणाई।
यह मधुरस-भीनी बात कहाँ से आई॥

भर कर पिचकारी बोली सजनि सुकेशी।
"बचने न यहाँ अब पाओगे परदेसी।"
शरमा शरमा कर सारे वसन भिगोये।
वह अति सलज्ज सुन्दरता मन को भाई।
होली के दिन बरसात कहाँ से आई॥

मैंने झुक झूम तभी छीनी पिचकारी।
"निष्ठुर"! कहकर अखियाँ झुक गई तुम्हारी।
मैं क्या सखि भला गुलाल लगाऊँ तुमको—
तुम पर है अल्हड़ यौवन की अरुणाई।
होली के दिन बरसात कहाँ से आई?

दिन बीता, सन्ध्या आई, पर फैलाती।
तुमने दीपक को संजो जलाई बाती।
मैं पास खड़ा था तुम शरमाकर बोलीं—
निर्मम! मेरी तो है दुख रही कलाई।
यह मधुरस-भीनी बात कहाँ से आई?

उपेक्षा के शरों से बींध दो........

उपेक्षा के शरों से बींध दो उनको–
सजनि ! कर व्यंग्य जिनका काम मुस्काना ॥

जवानी, साथ है फिर रूप, क्या कहने,
पड़ेंगे विश्व के ताने हमें सहने,
बिना माँगे कई उपनाम आयेंगे,
तुम्हें पगली, मुझे मदमस्त दीवाना ॥

सुरा तो व्यर्थ में बदनाम है रंगिनि !
जवानी का नशा उद्दाम है रंगिनि !
जवानी यदि शुभे ! सचमुच जवानी है––
नहीं संभव किसी का होश में आना ॥

जवानी पर सभी लांछन लगाते हैं,
जवानी बीतते ही भूल जाते हैं।
कभी वे भी बहुत उन्मत्त थे मधुरे !
कि जिनका काम हमको आज समझाना ॥

उन्हीं को रूप से चिढ़ आज है रानी,
सभा में रूप की जो भर चुके पानी,
रहे जो प्यार की कसमें बहुत खाते—
वही अब खीझते सुन प्यार का गाना ॥

नहीं, अब चाँदनी उनको तनिक भाती,
कली भी शूल बन, उनको चुभी जाती,
पपीहे के लिए वह हो चुके बहरे
मिटा दें चाँद को, सम्भव न पर पाना ॥

किसी की याद में जो खुद नहीं सोये,
जमाने को बहुत कोसा, बहुत रोये,
विवशता ने बना डाला उन्हें ज्ञानी–
जिन्होंने स्वयं को अबतक न पहचाना ॥

जवानी वचन देगी तो निभायेगी,
मिटेगी पर न पग पीछे हटायेगी,
जवानी औ' बुढापे में यही अन्तर—
जवानी ने कभी बंधन नहीं माना ॥

जवानी जिस किसी पर भी कभी आई,
उमगों की घटायें साथ ही लाई,
पुण्य से पाप यूं बोला—चलो साथी–
जवानी को बहुत ही कठिन बहकाना ॥

पहली बार आज मैं.......

पहली बार आज मैं आया तेरी मधुशाला में !

अस्त व्यस्त है वेश, छा रहा नयनों में पागलपन,
क्या बतलाऊँ मधुरे कितनी जलन लिये है जीवन
अंगारों से खेल चुकी है खेल, जवानी मेरी——

कभी न पी पर फिर भी दुनिया कहती मतवाला मैं
पहली बार आज मैं आया तेरी मधुशाला में !

इतनी गहरी लाओ जिससे होश न रहने पाए
इतनी अधिक पिलाओ, दो क्षण जीवन ही मिट जाए
मैं चिर युग से तृपित और चिर युग से पीड़ित प्राणी

युगों युगों से झुलस रहा हूँ मैं अन्तर्ज्वाला में
पहली बार आज मैं आया तेरी मधुशाला में !

जाने किसका मौन निमन्त्रण यहाँ खींच लाया है
जाने क्यों एकाकीपन से मन हो अकुलाया है
जीवन और मरण दोनों से है पहचान पुरानी,

कोई बात नहीं हालाहल घोलो तुम हाला में,
पहली बार आज मैं आया तेरी मधुशाला मे !

पहली बार आज तुम……

पहली बार आज तुम आए मेरी मधुशाला में !

देख रही हूँ भोले मुख की भाव मुग्ध रेखाएँ
सोच रही थी सफल हो चली जीवन की आशाएँ
जीवन में संगीत, मगर है फिर भी घनी उदासी

कब से प्राण ! प्रतीक्षा में थी पगली मधुबाला में
पहली बार आज तुम आए मेरी मधुशाला में !

जाने कितने आए मधु के चपक चढ़ाने वाले,
जीवन को मदहोश बनाकर हृदय लुटाने वाले
प्रथम बार जीवन में देखी ऐसी एक जवानी

आकर मुझ से माँग रही जो हलाहल हाला में।
पहली बार आज तुम आए मेरी मधुशाला में!

समझ रही हूँ नियति कर रही है कुछ मौन इशारे,
आज मुझे जीवन दे देना होगा बिना विचारे,
प्राण! तुम्हारी ज्वाला तो पीने को मैं प्रस्तुत हूँ

किन्तु मुझे जलना होगा अब जीवन की ज्वाला में
पहली बार आज तुम आए मेरी मधुशाला में!

तुम मुझे मदिरा पिलाने.......

तुम मुझे मदिरा पिलाने के लिए बेचैन क्यों हो ?

चाहता हूँ मैं हृदय के गीत दुनिया को सुनाऊँ
चाहता हूँ मैं क्षितिज के पार जाकर लौट आऊँ
मैं फिरूँ नभ की नशीली घाटियों में मुस्कराता

तुम मुझे बन्दी बनाने के लिए बेचैन क्यों हो ?
तुम मुझे मदिरा पिलाने के लिए बेचैन क्यों हो ?

मत करो वह बात जो आघात करती है हृदय पर
मत गिराओ बिजलियाँ टूटे हुए मेरे निलय पर
जिन्दगी का क्या पता आखिर कभी मुड़ना पड़ेगा

तुम मुझे सचमुच मिटाने के लिए बेचैन क्यों हो ?
तुम मुझे बन्दी बनाने के लिए बेचैन क्यों हो ?

मैं समझता हूँ तुम्हारी जिन्दगी की बात सारी
चाहती हो तुम तुम्हारा बन रहूँ पागल पुजारी
जो असम्भव है उसे सम्भव नहीं तुम कर सकोगी

तुम मुझे जी भर रुलाने के लिए बेचैन क्यों हो ?
तुम मुझे मदिरा पिलाने के लिए बेचैन क्यों हो ?

मैं कलाधर हूँ कला जीवन डगर की चाँदनी है
वेदना ही विश्व में चिर संगिनी मेरी बनी है
बन किसी की स्मृति हृदय में दीप पथ प्रज्वलित करती

तुम निठुर उसको बुझाने के लिए बेचैन क्यों हो ?
तुम मुझे मदिरा पिलाने के लिए बेचैन क्यों हो ?

मैं दुखों की छाँह में मृदु गीत बन पलता रहा हूँ
बन अडिग तूफान में भी अनवरत चलता रहा हूँ
जो सबल अनुभूतियाँ विश्वास जीवन का गईं बन

तुम उन्हें झूठी बताने के लिए बेचैन क्यों हो ?
तुम मुझे बन्दी बनाने के लिए बेचैन क्यों हो ?

रूप को ही सृष्टि का आधार मैं कैसे समझलूँ
इस क्षणिक मनुहार को मृदु प्यार मैं कैसे समझलूँ
प्यार जीवन में बहुत कम विश्व स्रष्टा ने बनाया

व्यर्थ अपनापन दिखाने के लिए बेचैन क्यों हो ?
तुम मुझे मदिरा पिलाने के लिए बेचैन क्यों हो ?

सच कहो, क्या रूप कवि का मौन बन कर रह सकेगा
विश्व के प्रति कवि हृदय की मूक ममता सह सकेगा
मौन हो तुम, है नही उत्तर तुम्हारे पास कोई

फिर विरह के गीत गाने के लिए बेचैन क्यों हो ?
तुम मुझे अपना बनाने के लिए बेचैन क्यों हो ?

अन्तर्ज्वाला

क्यों,आज सुराही से तुम मुझे पिलाने आई हो हाला ?
बतलाओ रंगिनी, कहाँ गया, वह मेरा नीलम का प्याला ?

क्या कहती हो ?

अनजाने में नादानी से वह सुन्दर प्याला टूट गया,
जो भाग्य बनाया था हमने, अपने ही हाथों फूट गया,

कुछ बात नहीं,

इन नन्हीं-नन्हीं बातों से क्यों घबरा जाती हो रानी ।
मानव करता ही आया है, पगली, युग युग से नादानी ॥

मत सोच शुभे,

मैं फूटा भाग्य बना लूँगा, मैं खुद ही भाग्य विधाता हूँ ?
कोई चिन्ता की बात नहीं, जब मैं खुद ही निर्माता हूँ ॥
लाओ हाथों से पी लूंगा मैं तो अल्हड़ पीनेवाला—
तुम आज सुराही से ही मुझे पिलादो जी भर कर हाला ॥

इस दुनिया ने,

अच्छे अच्छों को मिटा दिया जो थे प्रियतम के दीवाने,
प्रेमी के उर की पीड़ा को यह पागल दुनिया क्या जाने,
जल रही शिखा

पर देख ज्योति उसकी रानी भ्रमरों ने कब जलना जाना।
बिन सोचे-समझे झुलस गया वह पागल प्रेमी परवाना॥

हो गया राख—

दुनिया बोली—इस पागल के क्या हाथ भला जल कर आया।
वह क्या जाने उस पागल ने क्या मर कर दुनिया में पाया॥
पीने वाले की मस्ती को क्या समझ सकेगी मधुबाला—
लाओ हाथों से पी लूँगा मैं तो अल्हड़ पीनेवाला॥

तेरे लोचन—

दो नील चषक जैसे सुन्दर है छलक रही जिनमें मस्ती,
मादकता आज बसा बैठी, ओ देवि, यहाँ अपनी बस्ती,

मैं देख इन्हें--
यदि सच पूछो,सच बतला दूं, तो भूल गया अपना जीवन
क्या बतलाऊँ कितनी प्यारी बातें सोचा करता है मन

क्या कहा प्रिये,

यह स्मृति का धुआँ धधक करके बन जाये न साजन चिंगारी
है दुनिया पथ में खड़ी हुई बाधा बनकर कितनी भारी
अब नहीं. देवि, बुझ पायेगी है दहक उठी अन्तर्ज्वाला।
लाओ हाथों से पी लूँगा मैं तो अल्हड़ पीनेवाला॥

प्रतीक्षा में

•

संध्या बीती, किस मौन प्रतीक्षा में बैठी तू दीवानी ?
क्या निर्मम आने वाले हैं करती हैं उनकी अगवानी ?

रजनी आई,

दृग में जल कण छलके ढलके बनकर मोती गिर पड़े वहीं
क्यों घबराती है तू आली, आते ही होंगे निठुर कहीं

क्या सोच रही ?

कोई पंथी अपने पथ पर गिरता पड़ता चलता होगा
सखि ! उसके मग का अन्धकार प्रति पग पग पर छलता होगा

मुंद गये पलक,

तेरे उर में प्रिय की स्मृति का है मधुर दीप जलता आली
तू मूर्ति बनी सी बैठी है बिखरी हैं अलकें घुंघराली
नव दीप जलाती फिरती हैं गृह पथ पर कुल वधुएँ रानी।
संध्या बीती, किस मौन प्रतीक्षा में बैठी तू दीवानी ?

उठ देख सजनि,

धरती अम्बर में होड़ लगी पृथ्वी ने नभ को ललकारा
अब तक तू मुझसे जीता था पर इस क्षण तू मुझसे हारा

चल उठ संगिनी ,

मन्दिर में पीपल के नीचे सब सखियाँ दीप जला आईं
गा गाकर मंगल गीत शुभे, वे कुल देवता मना आईं

क्या कहा अरी—

"रूठे मुझसे मेरे प्रियतम" कब लौटेंगे तू ही बतला
उसकी क्या जग में दीवाली अपना प्रिय जिसको नहीं मिला
चल उठकर दीप जला रानी, आते ही होंगे प्रिय मानी ।
संध्या बीती, किस मौन प्रतीक्षा में बैठी तू दीवानी ?

कब आओगे ?

जब बैठी बैठी ही साजन मैं सपनों में खो जाऊँगी
तुम चुपके चुपके से आना मैं उठकर दीप जलाऊँगी

सचमुच साजन !

यह सपनों का मधुमय प्रदेश कितना उज्जवल, कितना प्यारा
इसमें कुछ भयप्रद बात नहीं इसका तो शासन ही न्यारा

उठ, दीप जला,

आँखों में मेरी राह लिए, तू कब से सोई है आली
उठ, जैसी इच्छा आज मना मधुरे मनचाही दीवाली
अपनी इस पर्ण कुटी को तू आलोकित कर दे कल्याणी
संध्या बीती, किस मौन प्रतीक्षा में बैठी तू दीवानी ?

पूछ रहा है मन मुझ से·······

•

पूछ रहा है मन मुझ से, वह प्रात, कहाँ होगी ?
नशीली बात कहाँ होगी ?

रिमझिम-रिमझिम बरस रहा था अम्बर से पानी,
सजग नयन करते थे अपने प्रिय की अगवानी,
मन कहता था अब तो मन के मीत न आएँगे,
बता तुझे फिर कौन प्यार के गीत सुनाएँगे,

इतने में देखा अपने में सिमटी सकुचाई,
चपल चरण द्रुत गति से धरती आँगन में आई,
काली घुँघराली अलकें नागिन सी बल खातीं,
उन्हें हटा चंदा से मुख से बोली शरमाती,

देर हो गई फिर भी, साजन, वचन निभाया है,
सच बतलाओ, प्रिय, ऐसी बरसात कहाँ होगी ?

रंगीली प्रात कहाँ होगी ?

वह भी सावन था सावन की साँझ सुहानी थी,
तुम ने भी जी भर कर हठ करने की ठानी थी,
संध्या का तारा आ कर निशि की अगवानी को,
दुहराता था बैठा बैठा प्रीत पुरानी को,

पर रजनी कब पूछ सकी उस तारक की गाथा,
उसके आगे झुकता अगणित तारों का माथा,
चाँद चाँदनी का दुकूल ओढ़े मिलने आता,
अगजग का कण कण मस्ती से सिहर सिहर जाता,

चाँद गा रहा हो, अमृत की फुहियाँ झरती हों,
प्रिय, ऐसी हिमस्नात मधुरतम रात कहाँ होगी,
सुखद बरसात कहाँ होगी ?

सुन लो, मेरे चाँद, चाँदनी मैं दीवानी हूँ,
मैं तेरे सुलझे जीवन की प्रणय कहानी हूँ,
मुझे नहीं अपने हित रजनी की उपमा भाती,
मैं हूँ चाँद जुन्हाई प्रिय बिन कभी न मुसकाती,

किस में इतनी क्षमता प्रिय से दूर करे मुझ को,
प्रिय के बिन जीने के हित मजबूर करे मुझ को,
यह सावन मन भावन ले कर मेघों की माला,
पिला रहा है प्रकृति नटी को जी भर कर हाला,

गाओ कोई गीत, प्रिये, तुम मस्ती से गाओ,
सुरभि सनी ऐसी रसभीनी बात कहाँ होगी,
प्यार की बात कहाँ होगी ?

किस निर्मोही ने रोक लिया······

है दूर कहीं पर मधुशाला, मैं यहाँ खड़ा पीनेवाला

चिन्तित प्रेयसि कहती होगी
क्यों निष्ठुर अभी नहीं आए
अपलक मग जोह रहे होंगे
मदमाते लोचन अलसाए
मैं अपनी तंद्रिल पलकों पर
अलकों का जाल बिखेर रहा
इसलिए कि उर की आकुलता
यह पागल विश्व न पढ़ पाए
रह रह भरती होगी प्याला
औंधा देती होगी हाला
फिर नत मस्तक कहती होगी

किस निर्मोही ने रोक लिया, मेरा निर्मोही मतवाला ?
है दूर कहीं पर मधुशाला, मैं यहाँ खड़ा पीनेवाला ।।

आकाश कुसुम खिलकर महके
फिर धीरे धीरे मुरझाये
निशि लौटी पंछी ने गाया
नभ ने निज आँसू विखराये
मैं अव तक प्रियतम की स्मृति में
वैठी हूँ वनकर दीवानी
नारी के उर की वेचैनी
पागल प्रिय, समझ नही पाये
फिर अपने सूने जीवन पर
दो आँसू टपकाती होगी
पहले ही तुमसे आशा थी
पर इतने पर भी आह निठुर ! तुमको ही पहनाई माला ।
है दूर कही पर मधुशाला, मैं यहाँ खड़ा पीनेवाला ।।

नारी की नन्ही भूलों पर
क्यों रूठा करते हो साजन
ओ मनमानी करने वाले
औरों के भी होता है मन
फिर भोली के भोले मन में,
यह भाव तभी आता होगा
क्या ज्ञात किसी संकट में ही
फँस आज गए हों जीवनधन !
भोली भाली-विल्कुल अल्हड़
घवरा जाती होगी उस क्षण
उद्विग्न हृदय कहती होगी –
मेरी इस काली दुनिया का तुम से ही तो है उजियाला ।
है दूर कही पर मधुशाला, मैं यहाँ खड़ा पीने वाला ।।

मैं चला, मुझे अब मत रोको
क्या चिन्ता है तूफानों की
मेरे हित होली जलती है
किस पगली के अरमानों की
पथ पर चलने वालो को तो
सब कुछ ही सहना है जग में
वह जीतेगा जिसके उर में
भावना भरी बलिदानों की
मैं आया, दृग खोलो मधुरे !
अब गई प्रतीक्षा की वेला
देखो सखि! सम्मुख कौन खड़ा--
मैं लाँघ चला आया संगिनि, बाधाओं का पर्वत काला ।
है दूर कहीं पर मधुशाला, मैं यहाँ खड़ा पीनेवाला ॥

आज तुम्हारे आग्रह पर.......

आज तुम्हारे आग्रह पर वे गीत पुराने—
युगों बाद फिर सजनि पड़े मुझको दुहराने।

कभी-कभी यदि मीत पुराने मिल जाते हैं
अपने स्वर से गीत पुराने दुहराते हैं
उस क्षण लगता है अन्तर में बैठा कोई
भर देता है मेरी आँखों के पैमाने।

सूनेपन में कभी तुम्हारी स्मृति आने पर
स्वयं न जाने क्यों मुखरित हो उठता है स्वर
यही गीत स्वर गंगा की लहरों पर तिरते—
ऐसे लगता है जाते हों तुम्हें मनाने।

जुगनू ने कब शुभे चाँदनी रातें चाहीं
भँवरे ने कब प्यार भरी बरसातें चाहीं
पर कवि का मानस तो मधुरे अति व्यापक है—
उसे चाहिए सब, अनजाने चिर पहचाने।

मैं मानव हूँ, मैं कोई भगवान नहीं हूँ
मैं निर्झर हूँ गर्वोन्नत चट्टान नहीं हूँ
मैं प्रतिक्षण प्रति पल आगे बढ़ने का आदी
गाता हूँ नित नए उमंगों भरे तराने।

नूतन गीत न अपने तुम्हें सुनाऊँगा प्रिय !
कोमल हृदय तुम्हारा नहीं दुखाऊँगा प्रिय !
अपने प्रति इन गीतों में इतनी ममता है—
सुन कर बरबस कह दोगे मुझ को दीवाने।

नूतन गीत पढ़ोगी, जब पढ़ कर गाओगी
विरह मिलन के स्तर से ऊपर उठ जाओगी
मेरे गीतों की गायिका बता दूँ तुमको—
अब न पड़ेंगे, तुम्हें कभी भी अश्रु बहाने।

मैं जग में परिवर्तन करने का अभिलाषी
अमृत पुत्र बन कर जीने के प्रति विश्वासी
महा क्रान्ति का बिगुल बजाना होगा मुझको—
और तुम्हें तब होंगे मेरे गीत सुनाने।

ओ मेरी सुन्दर मधुबाले·······

ओ मेरी सुन्दर मधुबाले ! दूर तुम्हारी मधुशाला।
खेद कि इतनी दूर नहीं आ सकता यह पीनेवाला ॥

याद तुम्हें होगा वह दिन जिस दिन संध्या की बेला में,
निकल पड़ा था मधुशाला से पंछी एक अकेला मैं,
सिर पर अम्बर था धरती थी मेरे पैरों के नीचे,
सुलग रही थी अन्तस्थल में भीषण मरघट की ज्वाला।
ओ मेरी सुन्दर मधुबाले ! दूर तुम्हारी मधुशाला ॥

कभी न चलने वाले पग भी, सखि उस दिन अविराम चले,
पल भर को भी नहीं रुके वे किसी वृक्ष की छाँह तले,
चाह यही थी उनको जाकर दूर क्षितिज में रुके कहीं,
जहाँ न कोई मधुशाला हो और न कोई मधुबाला।
ओ मेरी सुन्दर मधुबाले ! दूर तुम्हारी मधुशाला ॥

कुछ दिन नहीं रुचीं अधरों को मादक मदिरा की बातें,
कुछ दिन नहीं रुचीं नयनों को चाँद भरी लम्बी रातें,
कुछ दिन नहीं हृदय ने चाहा, कोई गीत सुना पाये,
कुछ दिन नहीं छुआ हाथों ने सुन्दर नीलम का प्याला।
ओ मेरी सुन्दर मधुवाले ! दूर तुम्हारी मधुशाला ॥

जीवन के कितने मदक क्षण बीत गये बेहोशी में,
बदल गया क्रन्दनमय जीवन सखि, अनन्त खामोशी में,
चाँद-सितारों की बस्ती से अब अपना नाता ही क्या ?
कसम दिला लो भूले भटके भी यदि देखी हो हाला।
ओ मेरी सुन्दर मधुवाले ! दूर तुम्हारी मधुशाला ॥

मिला तुम्हारा पत्र, पत्र के साथ निमंत्रण मिला प्रिये,
अब न हृदय को मेरे अमृत भी पायेगा जिला प्रिये,
सोचोगी कोई परदेसी आया था इस जीवन में,
उसकी स्मृति में रहो लुटाती मृदु मुक्ताओं की माला।
ओ मेरी सुन्दर मधुवाले ! दूर तुम्हारी मधुशाला ॥

होड़ लगी पीने वालों की, शाला में मधुवाला से,
जलने आये शलभ हठीले, दीप शिखा की ज्वाला से,
शलभ जलाने को आतुर है निर्मम दीपक की वाती,

क्या जाने दीपक की बातें सजनि, शलभ भोलाभाला।
ओ मेरी सुन्दर मधुवाले ! दूर तुम्हारी मधुशाला ॥

मैं तो पागल शलभ नहीं जो आकर प्राण गँवा जाऊँ,
मैं तो आँधी का झोंका जो शत शत दीप बुझा जाऊँ,
आ न सकूँगा मधुरे मुझ को क्षण भर भी अवकाश नहीं

पीड़ा को भी आज पड़ा है, मेरे प्राणों से पाला।
ओ मेरी सुन्दर मधुवाले ! दूर तुम्हारी मधुशाला ॥

विगत प्रेयसि के प्रति……

व्यर्थ ही क्यों सह रही हो तुम नियति की मार।

हो गई हो तुम नियति के सामने मजबूर
कर दिया मैंने नियति का वक्ष, चकनाचूर
मिल न पाये हम, न थी तुम को मिलन की चाह—
स्वयं छोड़ा हाथ में आया हुआ अधिकार।
व्यर्थ ही क्यों सह रही हो तुम नियति की मार॥

दीप जल जल कर तिमिर से कह रहा है आज
जल रहा हूँ बन किसी की जिन्दगी का राज
प्रिय प्रतीक्षा में बुझा वह दीप, खोकर स्नेह—
पर शलभ आया न लेकर प्यारमय मनुहार।
व्यर्थ ही क्यों सह रही हो तुम नियति की मार॥

वह प्रथम परिचय मदिरतम, वह प्रथम मुस्कान
स्मृति गगन में विचरते हैं स्निग्ध चन्द्र समान
हैं नहीं क्षमता, कहूँ, तुमको गया हूँ भूल—
स्मृति तुम्हारी रही पीड़ित प्राण का आधार।
व्यर्थ ही क्यों सह रही हो तुम नियति की मार ।।

मैं चला आया, बहुत आगे, बहुत ही दूर
बन चुका हूँ अब, किसी की माँग का सिन्दूर
लौटना सम्भव नहीं इस जिन्दगी में मीत !
बन चुका हूँ अब किसी की नाव की पतवार।
व्यर्थ ही क्यों सह रही हो तुम नियति की मार ।।

क्यों किया तुमने हृदय की सृष्टि पर आघात ?
आज तक यह बात है मेरे लिए अज्ञात
सृष्टि जो तुमने बनाई, दे प्रणय रस दान
मुस्करा कर क्यों उसी पर धर दिए अंगार।
व्यर्थ ही क्यों सह रही हो तुम नियति की मार ।।

पर सुन! मैंने की तुम लेकर सघन संताप
वहन करती आ रही हो नियति का अभिशाप
जग उठी है चिर पुरातन सुप्त उर की पीर—
मानता हूँ प्राण ! मैं तुमसे गया हूँ हार।
स्मृति तुम्हारी रही पीड़ित प्राण का आधार॥

—

मानता हूँ हार मेरी, है तुम्हारी जीत
किन्तु मेरी बात मानो आज, मन के मीत !
है तुम्हें सौगन्ध मेरी बात जाना मान—
अब बसा कर नीड़ जीवन का करो शृंगार।
व्यर्थ ही क्यों सह रही हो तुम नियति की मार॥

मेघ शावक आ गए हैं……

तुम जहाँ पर हो, वहीं से, ध्यान से देखो सुनयने !
नील नभ पर फिर हठीले मेघ शावक आ गए हैं।

ये वही हैं, छाँह में जिनकी कभी हम तुम मिले थे,
देख जिनकी स्निग्ध छवि प्रिय ! दो अजाने दिल खिले थे,
दो दृगों ने दो दृगों की मूक भाषा को पढ़ा था—
ये वही हैं, यदि तुम्हें भी आज फिर तड़पा गए हैं !

क्या तुम्हारा मन पपिहरा आज सहसा गा उठा है?
चंचला की तड़प से स्मृति का धुआँ लहरा उठा है?
मेघ के उन्मत्त गर्जन से तुम्हारे भी चरण क्या—
सच कहो! पागल मयूरा की तरह भरमा गए हैं?

क्या तुम्हारे भी यहाँ वातावरण महका हुआ है?
चाँदनी भटकी हुई है, चन्द्रमा बहका हुआ है?
और तारों की नगरिया आज उजड़ी-सी पड़ी है,
क्या तुम्हारे लोचनों में भी सजल घन छा गए हैं?

देख इनको प्रिय! मिलन की चाह मन में जग गई है!
क्या हृदय की बीन विरहा स्वयं गाने लग गई है?
क्या तुम्हें भी प्राण! ये प्रिय का संदेशा दे रहे हैं,
सच कहो, क्या ये प्रवासी मेघ तुम को भा गए हैं?



जब कि सखियाँ झूल झूला, गा रहीं अमराइयों में,
प्राण! क्या उतरी हुई तुम सोच की गहराइयों में?
देख इन को स्वप्न की नगरी हुई आबाद मेरी,
क्या तुम्हारे स्वप्न में भी फिर पिया मुस्का गए हैं?

मगर तुम भुला न पाती हो.......

मुझे भुलाने को तुम सौ सौ कसमें खाती हो,
मगर तुम भुला न पाती हो।

मैं पढ़ लेता हूँ आँखों से अंतर की भाषा,
खीझ भरे पत्रों में मिलती जीवन की आशा,
प्रणय नहीं है, फिर न चाँद क्यों तुम को भाता है?
वासंती का मधुर पवन क्यों तुम्हें सताता है?
यह भाषा कवि के अंतर में पीड़ा भरती है,
जीवन के सूनेपन में उजियाला करती है,
इंगित की भाषा में मन की पीर बताती हो,
चाँदनी सी शरमाती हो।

दुखी क्षणों में करुणा का आंचल फहराती हो,
घुमड़ अँखियां भर आती हो।

पीठ मोड़, दृग पोंछ, हँसी नकली मुख पर ला कर,
अपने संयम की रक्षा करती हो मुस्काकर।
कोयलिया की कूक हूक अंतर में भर जाती,
सूनेपन में याद किसी परदेसी की आती,
स्वप्न सरीखी उजड़ी उजड़ी दुनिया दिखती है,
नहीं चाह पर पत्र लेखनी फिर भी लिखती है,
लिखना कुछ होता है, लेकिन लिख कुछ जाती हो,
बुझा कर दीप जलाती हो।

किसी गीत की प्रेम भरी पंक्तियाँ सुनाती हो,
भाव उर के दर्शाती हो।

कैसे कह दूँ, मुझ से मेरी राधा रूठी है,
जब कि अधर पर अब भी वह मुस्कान अनूठी है,
प्रणय नहीं है, किंतु प्रणय के लक्षण सारे हैं,
दीवानी मीरा के गीत तुम्हें अति प्यारे हैं,
मत पूछो, प्रिय, सुखद प्रणय की मादक परिभाषा,
व्यक्त स्वयं हो जाती है अंतर की अभिलाषा,
खत में लिख इनकार सदा उस पथ पर आती हो,
जहाँ अकसर मिल जाती हो।

पहाड़ी रात

हट रही हैं बादलों की टुकड़ियाँ—
आ रहा है चाँद पर कुछ-कुछ निखार।

चल रही सीरी पवन हँसती हुई
फब्तियाँ कुछ प्यार की कसती हुई
यह रंगीली रात मद से चूर है
प्रकृति भी उल्लास से भरपूर है
बज उठी है आज अपने आप ही—
चिर युगों के बाद जीवन की सितार।

ये हठीले मेघ शावक मौन बन
जा रहे हैं चूम चन्दा के चरण
गा रही हैं दूर कुछ सुकुमारियाँ
हो रही हैं मिलन की तैयारियाँ
ढोलकी पर अँगुलियों की थिरकनें—
कर रही हैं मृदुल मानस पर प्रहार।

आज मैं उद्विग्न और उदास हूँ
दूर हूँ ! फिर भी तुम्हारे पास हूँ
उधर अपने गेह के उस छोर पर
रुक गई जाकर अचानक ही नज़र
दीप बलने के लिए बेचैन है—
शलभ जलने के लिए है बेक़रार।

"मैं कभी संघर्ष से ऊबा नहीं
या किसी की याद में डूबा नही।"
है बनी यह बात कहने के लिए
स्वयं से सन्तुष्ट रहने के लिए
सोचता हूँ, है मनुज कितना छली—
जो स्वयं को छल रहा बन कर उदार।

भावनामय हृदय के आकाश पर
घूमते हैं मेघ बन बीते प्रहर
स्मृति तुम्हारी दामिनी की दमक-सी
बादलों के संग हृदय में आ बसी
रूप के अगणित अनूठे रूप हैं—
रूप को कोई नही पाया निहार।

"चाँद चाहे चाँदनी से दूर हो
चाँदनी क्यों चन्द्र के प्रति क्रूर हो।"
एक दिन ये शब्द थे तुमने कहे
जो नहीं अब याद तुमको ही रहे
हे कहीं ईश्वर ! अगर, सुन ले ज़रा—
माँगता हूँ प्यार के दो क्षण उधार।

सुन पवन की स्नेह मिश्रित झिड़कियाँ
खुल रही हैं, मुंद रही हैं खिड़कियाँ
इस पहाड़ी रात पर उन्माद है
आज की हर बात ही अपवाद है
इन क्षणों में एक सिगरेट के बिना—
आ रहा उद्विग्नताओं पर उभार।

अधरों तक आकर यदि......

अधरों तक आकर यदि कर से छूटे मधु का प्याला !

उस क्षण को दुर्भाग्य पड़ेगा कहना इस जीवन में
ऐसे ही क्षण आग लगाते हैं मधु के नंदन में
कोई रहे सजाता, जीवन भर अपनी फुलवारी
किंतु अचानक आकर पतझड़ वहाँ लगा दे ज्वाला।
अधरों तक आकर यदि कर से छूटे मधु का प्याला।।

उससे बढ कर इस जीवन में होगा कौन अभागा
मधुऋतु के आने की सुनकर जिसने यौवन त्यागा
जो यौवन के लिए रहा देता उपदेश सभी को—
पर यौवन के आने पर, दृग मूँद पकड़ ले माला।
अधरों तक आकर यदि कर से छूटे मधु का प्याला।।

ऐसी घटनाएँ आकर के बार बार जीवन में
पीड़ा भर देती हैं मानव के मतवाले मन में
वे पीड़ाएँ कवि के जीवन में भर देतीं गायन
पर ओठों की आशाओं पर बन गिरती हैं पाला।
अधरों तक आकर यदि कर से छूटे मधु का प्याला।

वह कली थी······

वह कली थी फूल बनने को चली—
पर चमन की धूल बन कर रह गई ।।

जिन्दगी है गीत बनने के लिए
गीत है संगीत बनने के लिए
किन्तु आवश्यक नहीं हर जिन्दगी ।
गीत बन कर के रहे हरदम खिली ।
दूर अपनों से तरणि की गोद में
मुग्ध मन, हँसती हुई आमोद में
वह लहर मँझधार बनने को चली—
किन्तु पगली कूल बन कर रह गई ।
वह कली थी फूल बनने को चली
पर चमन की धूल बन कर रह गई ।।

चाह थी जग देवता मुझको कहे
और हरदम पूजता मुझको रहे
किन्तु स्रष्टा को यही मंजूर है
मनुज से देवत्व कोसों दूर है
जो सजनि, जीवन डगर की छाँह थी
डूबते को देवता की बाँह थी
चली थी सौरभ लुटाने के लिए—
किन्तु पथ का शूल बनकर रह गई।
वह कली थी फूल बनने को चली—
पर चमन की धूल बन कर रह गई॥

चाह थी उनकी, कि उनके बाद ही
छोड़ जाएगा मुझे आह्लाद भी
किन्तु यह आह्लाद मेरा दास है
क्योंकि मेरा हृदय मेरे पास है
हृदय का व्यापार मैं करता नहीं
मैं किसी की याद में मरता नहीं
याद थी उन्माद बनने को चली—
किन्तु भोली, भूल बन कर रह गई।
वह कली थी फूल बनने को चली—
पर चमन की धूल बन कर रह गई॥

चरण आगे किन्तु……

रात चौदस की पहाड़ी पंथ सूनापन।
चरण आगे किन्तु पीछे जा रहा है मन॥

सुघड़ सुखद अतीत के कुछ पृष्ठ अपने आप
खुल, हृदय में भर रहे हैं मद भरा संताप
और सुधि के मेघ मन के व्योम पर छाए
पंथ भूला पथिक जैसे लौट घर आए
देख मधुऋतु, मुखर कोकिल सम पुराने गीत
स्मृति पटल पर कर रहे अंकित अतृप्त अतीत
छोड़ने को साथ आतुर आज अपनापन।
चरण आगे किन्तु पीछे जा रहा है मन॥

आज वर्षों बाद अपने व्यस्त जीवन से
आँकने आया प्रकृति छवि में थकित मन से
चाह थी, मन पा प्रकृति का प्यार गाएगा
साँस का सरगम नए कुछ गीत पाएगा
पर प्रकृति प्रतिशोध लेने के लिए आतुर
और भी उन्मत्त, आकुल हो उठा है उर
चाँद की किरणें जगातीं जा रही चिन्तन।
चरण आगे किन्तु पीछे जा रहा है मन॥

वह पुराने मीत जिनके साथ गाए गीत
इस प्रकृति के कक्ष में दुहरा रहे निज प्रीत
स्वप्न सोयें, जागरण बन कर लगे हँसने
फिर पुरानी पीर आई प्राण में बसने
भूल का अभिनय यवनिका है नहीं कुछ और
जब उठी प्रारम्भ नाटक का हुआ नव दौर
भूलने का यत्न करना एक पागलपन।
चरण आगे किन्तु पीछे जा रहा है मन ॥

यह पहाड़ी पंथ जिसका लक्ष्य अनजाना
चाँद ने जिस पर बिखेरा रूप मनमाना
काश ! प्रिय तुम देख पातीं यह घुला यौवन
तब तुम्हें अनुमान होता, वस्तु क्या जीवन !
काश ! तुमको भी कहीं स्रष्टा सजा देता
और चेतन मन तुम्हें भी कवि बना देता।
आँसुओं में घुल बिखर जाते अहम् के क्षण।
रात चौदस की, पहाड़ी पंथ, सूनापन ॥

पुरवैया के नूपुर बजते······

पुरवैया के नूपुर बजते छूम छनन छन, छन छन।
दसों दिशायें स्वर धाराएँ, बिखराने को उन्मन ॥

नर्तन करती पुरवैया के पग की थिरकन पाकर
मत्त मयूरा कुहका अगणित अर्ध चन्द्र फैलाकर
अलसाई सी प्रकृति नटी ने भी फिर ली अंगड़ाई
प्रिय दर्शन कर मानो कोई बैरागिन बौराई
नन्ही नन्ही बुंदियाँ बरसीं धरती के आँगन में
अति नूतन उल्लास छा गया नील गगन के मन में
मेघों के अन्तर में कौंधी तब विद्युत की तड़पन।
पुरवैया के नूपुर बजते छूम छनन छन, छन छन ॥

पावस की दूती बन कर आई अल्हड़ पुरवाई
इन्द्र धनुष बन उसकी सतरंगी चूनर फहराई
मेघों के छौने उसके इंगित पर स्वर लहराते
प्यासी धरती के अधरों पर अमृत कण बिखराते
सौंधी सौंधी गंध धरा के अन्तस्तल में जागी
ज्यों द्वितीया का चाँद देख मन होता है अनुरागी
या पा प्रिय का स्पर्श सिहरता है जैसे क्वारा तन।
पुरवैया के नूपुर बजते छूम छनन छन, छन छन ॥

पुरवैया की नूपुर ध्वनि सुन काँपी ग्रीष्म हठीली
पिउ पिउ कह प्यासे चातक ने छेड़ी तान रसीली
जिधर जिधर चलती पुरवैया नूपुर ध्वनि लहराती
पीड़ित प्राणों की वीणा में नए राग उपजाती
गीतों की लहरें लहराती हुई कृषक बालायें
मानो चौदस के चन्दा की चढ़ती हुई कलायें
पुरवाई के स्वागत में हर्षित धरती का यौवन।
पुरवैया के नूपुर बजते छूम छनन छन, छन छन ॥

सावन भादों के नूपुर पहने पुरवैया रानी
रस बरसाती, गीत सुनाती, कहती प्रणय कहानी
जादू सा है पुरवैया की पग थिरकन के स्वर में
प्रणय हिलोरें लगीं उमड़ने हर सूने अन्तर में
मेरा मन भी फिर अतीत के कुजों में भरमाया
क्या प्रिय! तुमको नहीं याद कोई परदेसी आया?
बिना बताये तुम्हे बढ़ चली होगी उर की धड़कन।
पुरवैया के नूपुर बजते छूम छनन छन, छन छन ॥

पुरवैया के नूपुर सुन कर सूखे ताल तलैया
मुझसे बोले—"गा कवि! तू भी नाच रही पुरवैया
छा जाएगी प्रिय! फिर से हम पर उन्मत्त जवानी
कोई कान्ह मनायेगा, फिर रूठी राधा रानी।"
प्रिय! मेरे गीतों पर छाई विरह मिलन की पीड़ा
जाग्रत हो उन्माद लगा करने अन्तर से क्रीड़ा
गीतों के स्वर लगे संजोने आकुल उर का क्रन्दन।
पुरवैया के नूपुर बजते छूम छनन छन, छन छन ॥